04- विधा की वैचारिक विमर्श की समसामयिक कृति

05- कला की पूरी पाठशाला थे कलाकार राजा रवि वर्मा

A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 04 अगस्त, 2024

06-अस्थि बाधित दिव्यांगजन बच्चों के निःशुल्क ऑपरेशन...

07- अभिनेताओं के नेता बनने की अंतहीन दास्तां

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 9 अंक 283 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

नदियां के तीरे.. सावनी बरसात में सूर्यास्त का शांत और सौम्य सौंदर्य

फोटो- ऋतुराज बुड़ावनवाला

सुप्रभात

अब पानी जो बरस गया
पेड़ों की बात नहीं होगी
दूर तक फैले वीरानों में
आस यही होगी
हर बरस यूँ ही आयेंगे मेघ
बरस जायेंगे...
फूटे हुए बर्तनों से
चू कर निकल जायेगा मेह
माटी के गलियारों में...
फिर प्यास वही होगी!

– कौशलेन्द्र सिंह

किसानों को मिलेंगे जमीन के डिजिटल आईडी नंबर

32वें आईसीएई में बोले प्रधानमंत्री मोदी, कान्फ्रेंस का किया उद्घाटन

पीएम ने कहा-छोटे किसान ही फूड सिक्योरिटी की सबसे बड़ी ताकत

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को को इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑफ एग्रीकल्चर इकोनॉमिस्ट (आईसीएई) के 32वें एडिशन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर पीएम मोदी ने कहा कि भारत जितना प्राचीन है, उतनी ही प्राचीन एग्रीकल्चर और फूड को लेकर हमारी मान्यताएं हैं, हमारे अनुभव हैं। ये कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली के विज्ञान केंद्र परिसर में हो रही है।

यह कॉन्फ्रेंस दुनियाभर में खेती और उससे जुड़ी समस्याओं और उसके समाधान खोजने के लिए हर तीन साल में आयोजित की जाती है। भारत में इसका आयोजन 65 साल के बाद किया जा रहा है। यहां इसका आयोजन 2 से 7 अगस्त तक होगा।

● भारतीय कृषि परंपरा में विज्ञान को प्राथमिकता दी गई

भारत जितना प्राचीन है उतनी ही प्राचीन कृषि और भोजन को लेकर हमारी मान्यताएं हैं, हमारे अनुभव हैं। भारतीय कृषि परंपरा में विज्ञान को प्राथमिकता दी गई है। हजारों साल पहले हमारे ग्रंथों में कहा गया है कि सभी पदार्थों में अन्न श्रेष्ठ है इसलिए अन्न को सभी औषधियों का स्वरूप उनका मूल कहा गया है। 10 करोड़ किसानों के खाते में तत्काल रुपए ट्रांसफर हो जाते हैं।

भारत की कृषि विकास दर दुनिया में सबसे ज्यादा

इस आयोजन में केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान भी शामिल हुए। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत की कृषि विकास दर दुनिया में सबसे ज्यादा बनी हुई है। उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ भारत की चिंता भी रही है कि वो उत्पादन स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित हो।

भारत में कृषि शिक्षा का मजबूत इकोसिस्टम

किसानों को उनकी जमीन को डिजिटल आइडेंटिफिकेशन नंबर भी दिया जाएगा। भारत में कृषि की शिक्षा और अनुसंधान से जुड़ा एक मजबूत इकोसिस्टम बना हुआ है। इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च के ही 100 से ज्यादा रिसर्च संस्थान हैं। भारत में कृषि और उससे संबंधित विषयों की पढ़ाई के लिए 500 से ज्यादा कॉलेज हैं। भारत में 700 से ज्यादा कृषि विज्ञान केंद्र हैं जो किसानों तक नई तकनीक पहुंचाने में मदद करते हैं। एग्रीकल्चर हमारे इकोनॉमिक पॉलिसी का केंद्र है। हमारे यहां करीब 90 फीसदी परिवार ऐसे हैं, जिनके पास बहुत कम जमीन हैं, ये छोटे किसान ही भारत की फूड सिक्योरिटी की सबसे बड़ी ताकत हैं। यही स्थिति एशिया के कई विकासशील देशों में है, इसलिए भारत का मॉडल कई देशों में काम आ सकता है।

राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के प्रयासों में राज्य सरकार करेगी पूर्ण सहयोगः मुख्यमंत्री डॉ. यादव

सत्ता से बड़ी कुर्सी, कुर्सी से बड़ी शिक्षा और शिक्षा से सुधरता है व्यक्ति का जवीन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि आदिकाल से भारत का अपना विशेष चरित्र और आदर्श संस्कृति रही है, इसलिए भारत विश्व गुरु कहलाया। 'जियो और जीने दो' के सिद्धांत के साथ सभी के कल्याण की कामना हम करते हैं। हमारी व्यवस्था में गुरु की भूमिका

● जीवन में शिक्षा का अधिकार सर्वोपरि- शिक्षा प्रत्येक बच्चे का अधिकार

अंधकार से प्रकाश की ओर ले जानी वाली रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जीवन में शिक्षा का स्थान सर्वोपरि है। किसी भी पद और हैसियत से अधिक महत्व शिक्षा का है। भगवान श्रीकृष्ण ने मध्यप्रदेश की धरती पर शिक्षा ग्रहण की और महाभारत के युद्ध के समय वे स्वयं अपनी आत्मा से शास्त्रार्थ करते रहे। गीता के विविध पक्ष हैं। गुरुकुल में प्राप्त शिक्षा से सेनाओं का अपना अनुशासन भी देखने को मिला था। जीवन और मृत्यु अटल है। इसके मध्य का समय मुस्कान और उत्साह के साथ सार्थक

जीवन जीने का होता है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि सत्ता से बड़ी कुर्सी, कुर्सी से बड़ी शिक्षा और शिक्षा से व्यक्ति का समग्र जीवन सुधरता है। जन्म और मृत्यु के बीच अनुशासन के साथ मिलने वाली मुस्कान ही जीवन का सार देती है। प्रदेश में कोई भी बच्चा ड्राप आउट का शिकार न हो, यह प्रयास किया जाएगा। शिक्षा सभी के लिए जरूरी है, इसलिए इसमें किसी तरह की कोताही नहीं होना चाहिए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आज भोपाल के आनंद नगर स्थित टीआईटी एक्सीलेंस कॉलेज में राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग द्वारा आयोजित कार्यशाला में हिस्सा लिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आयोग द्वारा महत्वपूर्ण विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई है। राज्य सरकार राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के प्रयासों में पूर्ण सहयोग करेगी। यह प्रयास होगा कि कोई बच्चा स्कूल जाना बंद न करे। किन्हीं परिस्थितियों में ड्राप आउट के लिए विवश का शिकार न बने। शिक्षा ग्रहण करना प्रत्येक विद्यार्थी का अधिकार है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी परीक्षाओं के पहले विद्यार्थियों से संवाद कर उनका आत्म-विश्वास बढ़ाते हैं। उन्होंने नई शिक्षा नीति के माध्यम से शिक्षा के महत्व में वृद्धि की है। अनेक सुविधाएं विद्यार्थियों को उपलब्ध करवाई जा रही हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी भारत में नई शिक्षा नीति लेकर आए।

अयोध्या गैंगरेप मामला

आरोपी सपा नेता की बेकरी पर बुलडोजर ऐक्शन

पीड़ित बच्ची से मिलकर योगी के मंत्री फूट-फूटकर रोए

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या गैंगरेप केस में योगी सरकार एक्शन में है। बच्ची की मां से सीएम योगी की मुलाकात के 24 घंटे बाद आरोपी सपा नेता मोईद खान की बेकरी को बुलडोजर से ढहा दिया। बेकरी तालाब की जमीन पर 3000 हजार स्क्वायर फीट में बनी थी। इसके बाद प्रशासन का बुलडोजर सपा नेता की दूसरी बिल्डिंग पर पहुंचा, लेकिन बिल्डिंग में क्ष्क्क बैंक चल रही थी। इस वजह से बिल्डिंग को तोड़ा नहीं गया। प्रशासन ने बैंक को एक हफ्ते में खाली करने का नोटिस दिया है। 65 साल के मोईद की 4 और प्रॉपर्टी पर भी बुलडोजर चलेगा। इसमें सपा नेता का घर भी शामिल है। प्रशासन ने सपा नेता की 1 करोड़ की जमीन को भी चिह्नित किया है। इधर, योगी सरकार में मंत्री संजय निषाद सुबह पीड़ित बच्ची से मिलने अस्पताल पहुंचे। बाहर निकलकर वह फूट-फूटकर रोए। कहा- अखिलेश का क्ष्ठ झूठा साबित हो रहा। लगता है कि इन अपराधियों के सहारे इनकी जीत हुई। वहीं, पुलिस ने 2 और सपा नेताओं समेत 3 पर स्नढ्ढक्र दर्ज की। पुलिस ने बताया कि आरोपियों में भदरसा नगर पंचायत के चेयरमैन मोहम्मद राशिद, सपा नेता जय सिंह राणा और एक अन्य है। पुलिस का कहना है- तीनों अस्पताल में भर्ती बच्ची से मुलाकात के नाम पर पहुंचे थे।

वायनाड लैंडस्लाइड

बड़ी सफलता! चार दिन बाद बचाए गए 4 आदिवासी बच्चे

● रेस्क्यू टीम ने हथेली में भरकर पानी पिलाया, शरीर से बांधकर पहाड़ से उतारा

कलपेट्टा (एजेंसी)। वायनाड लैंडस्लाइड के चौथे दिन शुक्रवार को एक अच्छी खबर आई। वन अधिकारियों ने 8 घंटे के ऑपरेशन में एक दूरदराज आदिवासी इलाके से 4 बच्चों समेत 6 लोगों का रेस्क्यू किया। बच्चे एक से चार साल के हैं। पनिया समुदाय का यह आदिवासी परिवार पहाड़ी की चोटी पर एक गुफा में फंसा था। न्यूज एजेंसी से बातचीत में कलपेट्टा रेंज के फॉरेस्ट ऑफिसर हशीस ने बताया- हमने गुरुवार को मां और 4 साल के बच्चे को जंगल के पास भटकते देखा। पूछताछ में उसने अपना नाम शांता बताया। उसने कहा कि वे लोग चूरलमाला के एक बस्ती में रहते हैं। उसके 3 और बच्चे, उनके पिता भूखे-प्यासे पहाड़ी पर एक गुफा में फंसे हैं। हशीस ने बताया- वायनाड में लैंडस्लाइड वाले दिन शांता अपने बच्चे के साथ जंगल में दिखी लेकिन उसने कहा कि वह सिर्फ घूम रही है। हमें पता था, वे भूखे थे और जंगल में अंदर जाने की तैयारी में थे। दो दिन बाद वे लोग फिर दिखाई दिए। इस बार वे हमें देखकर भागे नहीं। उनकी हालत भूख से खराब हो चुकी थी। पूछने पर शांता ने बताया कि उसका परिवार पहाड़ी पर एक गुफा में फंसा हुआ है। हमने 4 लोगों की टीम बनाई। भारी बारिश के बीच फिसलन भरी और खड़ी चट्टानों से होकर टीम ने 8 घंटे की कोशिश के बाद इन्हें निकाला। फिसलन भरी चट्टानों पर चढ़ने के लिए पेड़ों से रस्सियां बांधनी पड़ीं। जब हम गुफा के पास पहुंचे तो तीन बच्चे और एक शख्स वहां बैठे हुए थे।

बारिश में ही सीएम शिंदे से मिलने पहुंचे राज ठाकरे

महाराष्ट्र की सियासत में कुछ बड़ा होने वाला है, लग रहे कयास

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में मौसम की तरह इस वक्त राज्य की राजनीति भी करवट बदल रही है। इसी बीच हो रही तेज बारिश में ही मनसे चीफ राज ठाकरे महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे मिलने पहुंच गए। जिसको लेकर राजनीतिक हलकों में कई तरह के कयास लगाए जा रहे हैं। चर्चा यहां तक है कि मनसे चीफ राज ठाकरे ने राज्य विधानसभा चुनाव को लेकर एकनाथ शिंदे से बात की है। हालांकि, इस बात की कोई पुख्ता जानकारी नहीं है। इतनी जानकारी जरूर सामने निकलकर सामने आई है कि राज ठाकरे मनसे प्रतिनिधिमंडल के साथ मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे से उनके आवास पर मिलने पहुंचे। जिनमें विभिन्न मुद्दों जैसे बीडीडी चॉल का पुनर्विकास, पुलिस हाउसिंग कॉलोनी का पुनर्विकास और कुछ आवास परियोजनाओं को लेकर चर्चा की।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 36.3 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 4 अगस्त 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

एक सेंकड, तीन राउंड फायर और दुश्मन का सफाया

भारतीय सेना को मिलने वाली है 100 एडवांस 'वज्र' तोपें

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत अपनी सैन्य ताकत को और भी मजबूत करने जा रहा है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक सरकार ने सेना को आधुनिक बनाने के लिए 100 और के 9 वज्र-टी तोपें खरीदने का फैसला किया है। ये तोपें स्वदेशी कंपनी लार्सन एंड टुब्रो बनाएगी। यह कदम भारत की सैन्य क्षमता को और भी मजबूत करेगा। इससे खासकर ऊंचाई वाले इलाकों में भारत की ताकत और बढ़ जाएगी। इससे पहले भी भारत ने 100 के 9 तोपें खरीदी थीं, जिन्हें रेगिस्तानी इलाकों में तैनात किया गया था। अब इन्हें चीन से सटे एलएसी के पास पहाड़ी इलाकों में तैनात करने के लिए ढाला जा रहा है। चीन के साथ बढ़ते तनाव के मद्देनजर भारत अपनी सैन्य रणनीति और साजो-सामान को मजबूत बनाने में जुटा है। के-9 वज्र असल में दक्षिण कोरियाई के9 थंडर 155 एमएम तोप का भारतीय संस्करण है, जिसका निर्माण एलएण्डटी कंपनी भारत में लाइसेंस के तहत करती है। भारतीय संस्करण में स्वदेशी तकनीक का इस्तेमाल किया गया है, जिसमें फायर कंट्रोल सिस्टम, डायरेक्ट फायर सिस्टम और गोला-बारूद प्रबंधन प्रणाली शामिल हैं। ये सभी एलएण्डटी द्वारा ही विकसित और निर्मित किए गए हैं। के9 वज्र-टी तोपों को खास तौर पर कठिन परिस्थितियों में काम करने के लिए डिजाइन किया गया है। इन्हें -20 एसजी तक के तापमान में भी काम करने लायक बनाने के लिए विंटर किट से लैस किया गया है। इन किट में खास बैटरी और लुब्रिकेंट शामिल हैं जो पहाड़ी इलाकों की भीषण ठंड में भी काम कर सकते हैं। के9 प्रोजेक्ट की सबसे खास बात यह है कि इसमें 80 फीसदी से ज्यादा काम भारत में ही हुआ है।

संक्षिप्त समाचार

भारतवंशी कमला होंगी अमेरिका में राष्ट्रपति उम्मीदवार

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी चुनाव में डोनाल्ड ट्रम्प के खिलाफ डेमोक्रेटिक पार्टी से भारतीय मूल की कमला हैरिस राष्ट्रपति उम्मीदवार होंगी। पार्टी में 1 अगस्त से शुरू हुई ऑनलाइन वोटिंग में 28 घंटे बाद ही उन्हें 2350 से ज्यादा डेलीगेट्स का समर्थन मिल

गया है। इसी के साथ उन्होंने बहुमत का आंकड़ा पार कर लिया है। 6 अगस्त को वोटिंग खत्म होने के बाद ही उनके आधिकारिक तौर पर राष्ट्रपति उम्मीदवार बनने की घोषणा की जाएगी। न्यूयॉर्क टाइम्स के मुताबिक, कमला को चुनाव खत्म होने तक पार्टी के 99 फीसदी यानी 3923 डेलीगेट्स का समर्थन मिलने की उम्मीद है।

जाति बताए बिना सर्वे का फॉर्मूला राहुल गांधी के पास

गुवाहाटी (एजेंसी)। दो दिन पहले संसद में राहुल गांधी की जाति को लेकर शुरू हुआ विवाद खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर ने तंज कसते हुए कहा था कि जिन लोगों को अपनी जाति का पता नहीं, वे जाति सर्वे की बात कर रहे हैं। इस

बयान की विपक्षी सांसदों ने कड़ी आलोचना की थी। कांग्रेस ने आरोप लगाया था कि पीएम नरेंद्र मोदी के कहने पर अनुराग ठाकुर ने यह बात कही थी। अब इस विवाद को असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व सरमा ने भी तूल देने की कोशिश की है। उन्होंने शुक्रवार को इस मामले को लेकर विपक्ष पर सवाल उठाया।

आरक्षण के मुद्दे पर फिर गरमाई बिहार की राजनीति

तेजस्वी ने पकड़ी सीएम नीतिश कुमार की कमजोर 'नस'

पटना (एजेंसी)। बिहार में अगले साल होने वाले बिहार विधानसभा चुनाव के लिए नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने सीएम नीतिश कुमार के लिए सीक्रेट प्लान बना लिया। दरअसल विपक्ष ने अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव का अपना एजेंडा सेट कर लिया है। अब

किसी को इसमें संदेह नहीं होना चाहिए दशकों पुराने आरक्षण के मुद्दे के इर्द-गिर्द ही बिहार की राजनीति घूमेगी। सत्ताधारी गठबंधन एनडीए न्यायिक प्रक्रिया का पालन करेगा, तो न्याय व्यवस्था पर परोक्ष तौर पर विपक्ष सवाल खड़ा करेगा पर, राजनीति की धुरी अब आरक्षण ही होगी।

50 साल से संजो रखे हैं राशिनकर परिवार ने 200 दिए

इंदौर। इंदौर के राशिनकर परिवार द्वारा करीबन बीते 50 सालों में अलग-अलग धातु के 200 दिए इकट्ठे किए गए हैं इन दियों में मिट्टी, टेराकोटा , पीतल , चांदी और अन्य कई मटेरियल मौजूद है। आपको बता दें कि संदीप राशिनकर और उनकी पत्नी श्रीति राशिनकर ने देश के अलग-अलग शहर और राज्यों में घूम कर यह दिए इकट्ठे किए हैं जो आज इनके घर की एक अनूठी शोभा है। अब तक गोवा, दक्षिण भारत ,महाराष्ट्र और बनारस से कई दीपक का समूह उन्होंने अपने इस संग्रह में शामिल किया है और आगे भी वह ऐसे ही इस संग्रह को बढ़ाना चाहते हैं।

क्या है दीपक इकट्ठे करने के पीछे की कहानी

श्रीति राशिनकर ने बताया कि परिवार में दीपक की परंपरा काफी पुरानी है ,100 साल पहले जब घर के बुजुर्ग साइकल से सफर करते थे तो हमेशा उसमें आगे एक दीपक लगाते थे जो पथ प्रदर्शित करता था तभी से घर में दीपक इकट्ठा होना शुरू हुए , साथ ही मंदिर और घर की साज-सज्जा के लिए भी दीपक का इस्तेमाल किया जाता था वही दीपक आज इस बड़े संग्रह का एक हिस्सा है।

घर में पॉजिटिविटी लेकर आते हैं दीपक , तीज त्योहारों पर की जाती है खास पूजा।

उन्होंने आगे बताया कि दीपक ऊर्जा और प्रगति का प्रतीक है जो हमारे आसपास बहुत ही शुद्ध वातावरण पैदा करते हैं जिससे हमेशा पॉजिटिविटी का माहौल बना रहता है उनके अनुसार

दीपक हर तरह की नकारात्मक ऊर्जा को काटकर हमें प्रकाश भरे जीवन का आनंद प्राप्त करवाता है और इसी कारण हमेशा उनका लगाव दीपक के प्रति रहा, आपको बता दें कि उनके घर में खास तौर पर हरियाली अमावस्या पर दीपक की पूजा की जाती है जिसमें हर एक दीपक को साफ कर उन्हें डिस्प्ले करके रखा जाता है और कुमकुम हल्दी से उनकी पूजा होती है। श्रीति जी आगे बताती हैं की सावन महीने की पहली अमावस्या को महाराष्ट्रीयन समुदाय दीप अमावस्या के रूप में मनाते है। इस दिन गेहूं के आटे में गुड़ या शक्कर का पानी मिलाकर कट्ठा आटा मलते है। इस आटे से छोटे छोटे दीपक बनाते है और इन्हें कूकर में स्टीम करते है। ठंडे होने पर देशी घी दीपकों पर लगाकर

भगवान को भोग लगाते है और प्रसाद के रूप में ग्रहण करते है।

अक्सर लोगों से तोहफे में अब दीपक ही मिलते हैं और बदले में उन्हें दीपक ही गिफ्ट किया जाता है।

अब जब से लोगों ने इनका दीपको के प्रति एक खास लगाव देखा तब से इन्हें भेट में दीपक ही मिलने लगे हैं जो देश और विदेश दोनों जगह के होते हैं उन्होंने आगे बताया की वह दीपक को बहुत ही प्रगतिशील और सकारात्मक तोहफा मानते हैं इसीलिए वह भी लोगों को खासतौर पर दीपक ही गिफ्ट करते हैं।

नर्मदापुरम में तवा डैम के 9 गेट खोले

उमरिया में जोहिला डैम का गेट सीजन में पहली बार खुला, 12 जिलों में रेड अलर्ट

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में शनिवार को भी बारिश का दौर जारी था। भोपाल में सुबह से रिमझिम पानी गिरा। कलियासोत नदी किनारे से 20 परिवारों का रेस्क्यू किया गया। सूखी सेवनिया के नाले में 14 साल का लड़का बह गया। नर्मदापुरम में तवा डैम के 9 गेट खोले गए है। नर्मदा नदी में पानी छोड़ा जा रहा है। उमरिया में जोहिला डैम का एक गेट सीजन में पहली बार खोला गया।

इधर, नरसिंहपुर के गाडरवारा में गुरुवार देर रात तेज बारिश से कच्चा मकान ढह गया। परिवार के 8 लोग मलबे में दब गए। दो की मौत हो गई, जबकि तीन बच्चों समेत पांच लोग घायल हैं। वहीं, एक बच्चा पूरी तरह सुरक्षित है। इंदौर में सुबह से बूंदाबांदी हो रही है।

विदिशा और अशोकनगर को जोड़ने वाले बाह्य नदी के पुल पर दो फीट ऊपर से पानी बह रहा है। रायसेन में प्राकृतिक झरने फूट पड़े हैं। आज शनिवार को 12 जिले- सीहोर, रायसेन, नर्मदापुरम, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, सिवनी, मंडला, बालाघाट, डिंडौरी, अनूपपुर,

श्योपुर और शिवपुरी में अति भारी बारिश का रेड अलर्ट है। वहीं, भोपाल, जबलपुर समेत 23 जिलों में भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट है।

एमपी में इसलिए स्ट्रॉन्ग सिस्टम बना- आईएमडी भोपाल की सीनियर वैज्ञानिक डॉ. वेदप्रकाश सिंह ने बताया कि झारखंड और पश्चिम बंगाल के आसपास साइक्लोनिक सर्कुलेशन लो प्रेशर एरिया बन गया है। मानसून ट्रफ इस लो प्रेशर एरिया के केंद्र से होते हुए सीधी, ग्वालियर यानी मध्यप्रदेश के उत्तरी हिस्से से गुजर रहा है। एक अन्य ट्रफ पूर्व-पश्चिम से होकर इन्हीं क्षेत्रों में एक्टिव है। दक्षिण-पश्चिमी हवाओं की बात करें तो इससे बराबर नमी आ रही है, जो प्रदेश को प्रभावित कर रही है।

इस वजह से गुरुवार देर रात से ही तेज बारिश जारी है, जो अगले 2 दिन तक होती रहेगी। इसके लिए मौसम विभाग ने अलर्ट भी जारी किया है। शनिवार को सिस्टम आगे बढ़ेगा। इससे दक्षिण और मध्य हिस्से को प्रभावित करेगा। इसलिए कई जिलों में रेड और ऑरेंज अलर्ट है। लगभग पूरा प्रदेश तरबतर होगा। इस दौरान आकाशीय बिजली गिरने और बाढ़ आने की आशंका भी है।

सीधी में 3.7 इंच बारिश, रायसेन-सतना में 3 इंच पानी गिरा

प्रदेश में शुक्रवार को तेज बारिश का दौर जारी रहा। भोपाल और नरसिंहपुर में सवा इंच पानी गिर गया। सीधी में सबसे ज्यादा 3.7 इंच बारिश हुई। रायसेन और सतना में 3 इंच पानी गिर गया। पचमढ़ी, टीकमगढ़ में 1 इंच, रतलाम, उज्जैन और मलाजखंड में पौन इंच बारिश दर्ज की गई। बैतूल, नर्मदापुरम, धार, रीवा, उमरिया, गुना, इंदौर, शिवपुरी, छिंदवाड़ा, दमोह, जबलपुर, खजुराहो, मंडला में भी बारिश का दौर चलता रहा।

मणिपुर के जिरिबाम में टूटा शांति समझौता, फिर हिंसा

उपद्रवियों ने फायरिंग की, घर फूंका, कुकी-मैतई ने हालात सुधारने का भरोसा दिया था

इम्फाल (एजेंसी)। मणिपुर के जिरिबाम में शांति बहाल करने के समझौते के 24 घंटे के भीतर फिर से हिंसा हुई। जिरिबाम के लालपानी गांव में शुक्रवार की रात हथियारबंद लोगों ने कई राउंड फायरिंग की। एक घर में आग लगा दी। हालांकि, वहां कोई रहता नहीं था। अधिकारियों ने बताया कि लालपानी में मैतेई लोगों के घर हैं।

यहां के अधिकांश लोगों ने जिले में हिंसा भड़कने के बाद घर छोड़ दिया था। उपद्रवियों ने यहां सुरक्षा-व्यवस्था में ढील का फायदा उठाकर हमला किया। हमलावरों की अभी तक पहचान नहीं हुई है। घटना के बाद सुरक्षाबलों

को इलाके में भेजा गया है। मैतेई और कुकी समुदायों ने गुरुवार को असम के कछार से सटे सेंटर में एक बैठक के बाद शांति समझौता पर हस्ताक्षर किए थे। दोनों समुदायों ने जिले में स्थिति सामान्य करने, आगजनी और गोलीबारी की घटनाओं को रोकने की बात कही थी। दोनों पक्षों ने सुरक्षाबलों को भी पूरा साथ देने का आश्वासन दिया था। मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने शुक्रवार को विधानसभा में कहा कि पिछले 5 साल में राज्य में कुल 10,675 घुसपैठिए आए हैं। उन्होंने 12वीं विधानसभा के छठे सेशन में कहा-ये घुसपैठिए म्यांमार, बांग्लादेश, नार्वे और चीन से आए। इस अवसर पर सीएम वीरेन ने कहाकि पड़ोसी देशों से आए शरणार्थी ही मणिपुर में उपद्रव कर रहे हैं।

बिहार में 'बवाल' है, पुल गिरने पर 'सवाल' है

- **अब सीतामढ़ी में बांके नदी पर बना ब्रिज ध्वस्त, कई गांवों का आवागमन प्रभावित**

सीतामढ़ी (एजेंसी)। बिहार के सीतामढ़ी जिले में एक पुल गिर गया है। वैसे यह कोई पहली घटना नहीं है। पिछले महीने भी एक अन्य पुल का एक पिलर ध्वस्त हो गया था। तब से संभवतः उस पुल से ऊपर से होकर बड़े/लोड वाहनों का आना-जाना बंद है। अब बांके नदी पर बना आरसीसी पुल गिर गया है। बताया जाता है कि पहली बार आई बाढ़ के पानी का दबाव पुल सहन नहीं कर सका और वह ध्वस्त हो गया है। खास बात कि पिछले बार पुल के पिलर और दूसरे पुल के ध्वस्त होने की दोनों ही घटना एक ही प्रखंड क्षेत्र की हैं। बताया गया है कि सोनबरसा प्रखंड क्षेत्र के पुरन्दाहा राजबाड़ा पूर्वी पंचायत से इंदरवा पंचायत के दलकावा गांव जाने वाली मुख्य सड़क में

दुर्गा मंदिर के समीप से गुजरने वाली अधवारा समूह की बांके नदी पर बना आरसीसी पुल गिर गया है। इस घटना से राहगीरों को आवागमन में कठिनाई होने लगी है। यानी अब छोटी- बड़ी गाड़ियों का परिचालन प्रभावित हो गया। पुल ऐसे ध्वस्त हुआ है कि सिर्फ पैदल पार किया जा सकता है। उस पुल से बाइक भी नहीं ले जाया सकता है।

जम्मू कश्मीर में जल्द होगा चुनाव का ऐलान

ऐक्शन में चुनाव आयोग, तैयारियों का जायजा लेने सीईसी करेंगे दौरा

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू कश्मीर में चुनाव की तैयारियां जोर पकड़ने लगी हैं। इसी क्रम में चुनाव आयोग अगले हफ्ते

जम्मू कश्मीर का दौरा करेगा। यह दौरा मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार के नेतृत्व में 8-10 अगस्त तक होगा। इस दौरान उनके साथ चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और एसएस संधू भी होंगे। गौरतलब है कि इस केंद्रशासित प्रदेश में चुनाव कराने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने 30 सितंबर की समयसीमा तय की है। पिछले मार्च में, कुमार उस समय केंद्र शासित प्रदेश का दौरा करने वाले तीन सदस्यीय आयोग के एकमात्र सदस्य थे। उन्होंने राजनीतिक दलों और जम्मू कश्मीर के लोगों को आश्वासन दिया था कि निर्वाचन आयोग जम्मू कश्मीर में विधानसभा चुनाव जल्द ही कराएगा। उस समय निर्वाचन आयुक्तों के दो पद खाली थे। सोलह मार्च को लोकसभा चुनाव की घोषणा से कुछ दिन पहले ही उन्हें भरा गया था। जम्मू कश्मीर में लोकसभा चुनाव में रिकॉर्ड मतदान के बाद मुख्य चुनाव आयुक्त ने कहा था कि यह सक्रिय भागीदारी जल्द ही होने वाले विधानसभा चुनावों के लिए एक बहुत बड़ी सकारात्मक बात है, ताकि केंद्र

शासित प्रदेश में लोकतांत्रिक प्रक्रिया जारी रहे। श्रीनगर में, आयोग सबसे पहले राजनीतिक दलों से मुलाकात कर सकता है। मुख्य निर्वाचन अधिकारी और केंद्रीय बलों के समन्वयक के साथ समीक्षा की जाएगी। आयोग सभी जिलों के निर्वाचन अधिकारियों और पुलिस अधीक्षकों के साथ-साथ मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक के साथ तैयारियों की समीक्षा भी करेगा। आयोग दस अगस्त को समीक्षा बैठक करेगा।

कर्मचारी ने ही दिनदहाड़े कराई थी 35 लाख की लूट

थाने में रिपोर्ट कराने वाला ही निकला मास्टमाइंड, 26 लाख रु. बरामद

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में रोड कंस्ट्रक्शन कंपनी के कर्मचारियों से शुक्रवार दोपहर हुई 35 लाख रुपए की लूट का खुलासा हो गया है। पुलिस ने कंपनी के ही एक कर्मचारी सहित तीन लोगों को हिरासत में लिया है। इनसे 26 लाख रुपए बरामद किए गए हैं। मामले में कुल छह आरोपी होना बताए हैं, इनमें से तीन अभी भी फरार है। पुलिस को तीनों आरोपियों की लोकेशन महाराष्ट्र के धूलिया में मिली है टीम उनके पीछे है वहीं लक्की ने भागीरथपुरा में अपने रिश्तेदार मनीष के यहां पैसों का बैग रखा था पुलिस ने वहीं से बैग बरामद किया है। बता दें कि चलती बाइक पर लसुड़िया में जिस कर्मचारी सोनू बौरासी और अशोक के साथ वारदात हुई थी। उसमें सोनू ही लूट का मास्टरमाइंड निकला। उसने अपने साथियों की मदद से खुद पर हमला कराकर लूट कराई थी। दूसरे कर्मचारी अशोक की भूमिका स्पष्ट नहीं है। उसे अभी छोड़ दिया है। पुलिस अधिकृत तौर पर कुछ देर में खुलासा कर सकती है। पुलिस सूत्रों ने

बताया कि आरोपी सोनू के दो साथियों द्वारकापुरी का लक्की और सुखलिया का केशव हिरासत में ले लिया है। पूछताछ की जा रही है। उन्होंने तीन अन्य साथियों के भी नाम बताए हैं, जो अभी फरार हैं।

लूट की सूचना मिलते ही संदेह के घेरे में था कर्मचारी सोनू

एक दिन पहले दिनदहाड़े हुई लूट की सूचना कंपनी कर्मचारी सोनू बौरासी ने ही पुलिस को दी। उसके साथ अन्य कर्मचारी अशोक भी बाइक पर था।लसुड़िया में यह सूचना मिलते ही पुलिस ने टीमें बना दीं और नाके लगाए गए। हालांकि, सोनू और अशोक भी पूछताछ शुरू कर दी गई। कुछ ही देर बाद बयानों में विरोधाभास देख पुलिस ने सोनू को हिरासत में लिया। सख्ती से पूछताछ में टूटा और दो साथियों लक्की और केशव के साथ वारदात करना कबूल ली है।

बाइक से बाणगंगा तरफ से भागे थे आरोपी

पुलिस को इस पूरे घटनाक्रम में तीन और साथियों की तलाश है। इसमें एक साथी वारदात के वक्त आरोपी लक्की और केशव के साथ बाइक पर सवार था। दो अन्य साथियों पर रैकी करने की आशंका है। उन्हें भी ढूंढ़ा जा रहा है। पुलिस सूत्रों ने बताया अभी तक की पूछताछ में सोनू ने लक्की और केशव के नाम ही कबूले हैं।यह खुलासा होना बाकी है, कि लुटेरों की बाइक पर लक्की और केशव के साथ तीसरा साथी कौन था? वह फरार तीन आरोपियों में से एक है जबकि दो अन्य फरार साथियों ने रैकी की थी।

रिश्तेदारों के यहां छुपाए थे रुपए

लसुड़िया में वारदात के बाद तीनों आरोपी बाइक से हीरा नगर तरफ आए। इसके बाद अलग अलग हो गए। सोनू बौरासी की कॉल डिटेल में आरोपियों से बार-बार बात होने की पुष्टि हो गई थी। जब उसने साथी केशव और लक्की के नाम उगले तो पुलिस उनके घर भी पहुंची। पता चला कि दोनों ने अपने घरों पर शहर से बाहर जाना बता रखा था। बाद में कॉल डिटेल और सोनू के बताए अनुसार पुलिस उनका पीछा करते गई। देर रात तक सोनू के दो साथियों केशव और लक्की को हिरासत में ले लिया है।

दावा- बाकी रुपए फरार तीन साथियों के पास

वारदात के बाद आरोपियों ने रुपए अपने रिश्तेदारों के यहां रख दिए और शहर को छोड़ दिया। पुलिस ने लूटे गए 35 लाख रुपए में से 26 लाख रुपए बरामद कर लिए। गिरफ्तार आरोपियों ने बचे हुए 9 लाख रुपए फरार तीन साथियों के पास होना बताए हैं। जिनकी तलाश जारी है।

एमपीपीएससी का पेपर बेचने वाला निकला 10वीं का स्टूडेंट

यूजीसी नेट का पेपर भी बेचा, यू-ट्यूब से सीखा तरीका; सीबीआई घर पहुंची

इंदौर (एजेंसी)। एमपीपीएससी 2024 का पेपर टेलीग्राम ग्रुप पर एक नाबालिग लड़के ने डाला था। उसी ने दूसरे स्टूडेंट्स से पेपर के लिए 2500 रुपए मांगे थे। इंदौर पुलिस ने मामले को ट्रेस कर लिया है। आरोपी 10वीं का छात्र है। राजस्थान के झुंझुनू जिले का रहने वाला है। आरोपी ने पुलिस पूछताछ में बताया कि पेपर के एवज में कुछ स्टूडेंट्स से उसने रुपए भी वसूले हैं। यूजीसी नेट का पेपर भी इसी तरह सोशल मीडिया पर डाला था, जिसके बाद सीबीआई और आईबी उसका मोबाइल जब्त कर ले गई है।

एग्जाम के एक दिन पहले सौदा, अफसरों ने दर्ज करवाया केस

22 जून को सोशल मीडिया पर एमपीपीएससी 2024 का पेपर लीक होने का मामला सामने आया था। एमपीपीएससी पेपर लीक 2024 के नाम से टेलीग्राम पर ग्रुप बनाया था। इसमें एक लिंक दी गई थी। ग्रुप पर 2500 रुपए में पेपर का सौदा हो रहा था। पेपर पर सेट-ए लिखा था। प्रश्नों का स्तर भी एमपीपीएससी जैसा था। पेपर बेचने वाले ने ग्रुप पर अपनी पहचान छिपाकर रखी थी। केवल टेलीग्राम की एक आईडी दी थी। पेपर मांगने वालों के लिए क्यूआर कोड भेजा था। क्यूआर कोड पर रुपए भेजने पर पेपर मिलना था। हालांकि, एमपीपीएससी के अधिकारियों ने पेपर लीक की बात से इनकार कर दिया था। अगले दिन 23 जून को जब एग्जाम हुआ और पेपर को मैच किया तो पेपर

फर्जी निकला। इसके बाद एमपीपीएससी के अधिकारियों ने इंदौर के संयोगितागंज थाने में अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ केस दर्ज करवाया था।

सीबीआई-आईबी ने जब्त किया मोबाइल

नाबालिग ने यूजीसी नेट का फर्जी पेपर भी इस तरह सोशल मीडिया पर बेचा था। नंबर ब्लॉक कर दिया था। मामले में सीबीआई और आईबी की टीम उस तक पहुंची और उसका मोबाइल जब्त कर साथ ले गई। लड़के की हरकत से घरवाले भी परेशान हैं। उसका एक बड़ा भाई है। पिता का चप्पल-जूते का व्यवसाय है। 2-3 दिन पहले ही पुलिस ने बच्चे को ट्रेस किया। नाबालिग होने के कारण पुलिस ने नियमानुसार कार्रवाई कर दी है।

सरकारी स्कूल में छात्राओं को निर्वस्त्र कर चेकिंग का आरोप

इंदौर में परिजनों ने थाने पर टीचर के खिलाफ दिया आवेदन, केस दर्ज करने की मांग

इंदौर (एजेंसी)। शहर के एक सरकारी स्कूल में छात्राओं के कपड़े उतार चेकिंग का मामला सामने आया है। घर जाकर उन्होंने जब घटना की जानकारी दी तो परिजन स्कूल पहुंचे और जमकर हंगामा हुआ। इसके बाद परिजनों ने थाने पर आवेदन देकर मामले में संबंधित टीचर के खिलाफ केस दर्ज करने की मांग की है। मामला शासकीय शारदा कन्या उच्चतर स्कूल का है। छठवीं-सातवीं की छात्रा के पास मोबाइल की घंटी बजी तो चेकिंग की गई। बाद में छात्रा के पास से मोबाईल जब्त किया। इसके बाद टीचर ने स्कूल में चेकिंग अभियान चलाया। इसी दौरान एक-एक छात्रा को स्कूल के वॉशरूम में ले जाकर उन्हें निर्वस्त्र कर चेकिंग की गई। अन्य छात्राओं के पास मोबाईल नहीं मिले। छात्राओं ने घर जाकर पूरी घटना बताई। अगले दिन पैरेंट्स बड़ी संख्या में स्कूल में प्रदर्शन करने पहुंचे। पैरेंट्स कहना है कि स्कूल के अंदर इस तरह की चेकिंग करना गलत है। बच्चों के पास अगर मोबाइल मिले थे तो शिकायत पैरेंट्स से करनी चाहिए थी ना कि निर्वस्त्र कर हर बच्चे की चेकिंग करना था। मामले में स्कूल के प्रिंसिपल ने जांच की बात करते हुए पल्ला झाड़ लिया है। पैरेंट्स ने मल्हारगंज थाने में पूरे मामले में जांच के लिए एक आवेदन थाना प्रभारी को सौंपा है। अब पुलिस इस पूरे मामले में स्कूल के टीचर से पूछताछ करेगी। वहीं मामले में जिला शिक्षा अधिकारी सुषमा वैश्य छात्राओं के बयान लेने स्कूल पहुंची।

कार की चपेट में आने से युवक की मौत

घर लौटते समय युवक हुआ हादसे का शिकार

इंदौर (एजेंसी)। एरोड्रम इलाके में तेज रफ्तार कार वाले ने एक युवक को चपेट में ले लिया। हादसे में युवक की मौत हो गई। युवक प्रॉपर्टी का काम करता था। मंदिर से घर लौटते समय हादसे का शिकार हो गया। एरोड्रम थाना पुलिस के अनुसार मृतक का नाम सतीश भारती निवासी पटेल कॉलोनी एयरपोर्ट रोड है। सतीश को बिजासन माता मंदिर से घर लौटते समय तेज रफ्तार कार चालक ने चपेट में ले लिया। कुछ दूरी तक कार चालक सतीश को घसीटते हुए ले गया। कार पेड़ से जा टकराई। घटना में सतीश की मौके पर ही मौत हो गई। रिश्तेदारों के अनुसार आरोपी कार चालक 60 फीट रोड पर दो लोगों को टक्कर मारकर भाग रहा था। कुछ लोग उसे पकड़ने के लिए पीछा कर रहे थे। बचने के लिए कार स्पीड में चला रहा था। इस दौरान उसने सतीश को चपेट में ले लिया। मृतक युवक सतीश की शादी हो चुकी है और उसके दो छोटे-छोटे बच्चे हैं।

तलाक से नाराज दामाद ने ससुर की कार फोड़ी

शिकायत पर एमआईजी थाने में युवक पर दर्ज हुआ केस

इंदौर (एजेंसी)एमआईजी इलाके में एक कारोबारी की कार उसके दामाद ने पत्थर से फोड़ दी। दरअसल वह उसके तलाक से नाराज था। गुस्सा उसने ससुर की गाड़ी पर निकाला। एमआईजी थाना पुलिस ने पीड़िता सोफिया पिता फैजल इब्राहिम निवासी श्रीनगर एक्सटेंशन की शिकायत पर आरोपी मोहम्मद अयान शेख निवासी पाकीजा लाइफस्टाइल के खिलाफ केस दर्ज किया है। अयान ने पत्थर से सोफिया के कारोबारी पिता फैजल इब्राहिम की सेंट्रो कार को नुकसान पहुंचाया। सोफिया और परिवार के लोगों ने इस बारे में आरोपी से डांट कर पूछताछ की तो आरोपी अयान ने कहा कि वह अपने तलाक होने से नाराज हैं। इसलिए वह परिवार वालों को नहीं छोड़ेगा।

आरपीएफ जवान की बाईक रेलवे स्टेशन पार्किंग से चोरी

रेलवे पुलिस ने कैमरे चेक किए तो बंद मिले, केस दर्ज

इंदौर (एजेंसी)। रेलवे स्टेशन की पार्किंग से आरपीएफ जवान की गाड़ी चोरी हो गई। पुलिस ने वहां लगे कैमरे चेक करने की कोशिश की तो पता लगा कि कैमरे कई दिनों से बंद है। गौरतलब है कि पार्किंग वाले दोगुना शुल्क लोगों से वसूलते हैं। जीआरपी थाने में आरपीएफ जवान अनिल जाट ने गाड़ी चोरी की रिपोर्ट दर्ज करवाई है। अनिल अपनी बाईक पार्किंग में खड़ी कर 27 जुलाई को राजस्थान गया था। वह कल लौटा तो गाड़ी गायब मिली। पार्किंग वाले को रेलवे पुलिस ने तलब किया और कैमरे चेक करवाए तो कैमरे भी बंद मिले। मामले में चोरी की रिपोर्ट दर्ज की गई है।

कोर्ट में रोते हुए दिखे सीनियर सिटीजन

साली के बेटी दामाद ने की 12 लाख की धोखाधड़ी,70 हजार भी ठगे

इंदौर (एजेंसी)। जिला कोर्ट में शुक्रवार को एक बुजुर्ग रोते हुए मिले। लोगो के पूछने पर उन्होंने अपनी आपबीती बताई। इस पर लोग उन्हें वकीलों के पास लेकर पहुंचे। यहां से कोर्ट में आवेदन लगाने के साथ डीसीपी और स्थानीय टीआई को उनके साथ हुई ठगी की वारदात से अवगत कराया। जिला कोर्ट के वकील कृष्ण कुमार कुन्हारे ने बताया कि रवि पीपल और आकाश राठौर 74 साल के बुजुर्ग यशवंत शिरालकर निवासी वैशाली नगर को लेकर पहुंचे थे। बुजुर्ग यशवंत से रोने का कारण पूछा तब उन्होंने बताया कि उनके अविवाहित साले थे। जिनका नाम दत्तात्रेय निरखीवाले था। उनकी 17 दिसंबर 2015 में मौत हो चुकी है। वही उनकी पत्नी और दो साली की भी पहले मौत हो चुकी है। यशवंत ने बताया कि 17 अक्टूबर 2022 को उनकी दोनों साली सुमति पुण्डे पति गोविंद पुण्डे एवं अलका पति बसंत कुलकर्णी के परिवारजन एवं पुत्री कृतिका कुलकर्णी, उसका पति विनय कुलकर्णी, स्वाती उपासनी उसका पति गौरव एवं अन्य साली का बेटा महेश पुण्डे एवं बसंत कुलकर्णी ने पीड़ित से सम्पर्क करते हुए कहा कि दत्तात्रेय

निरखीवाले की मौत के बाद उनके कई बैंको में 12 लाख रुपए जमा हैं। रुपए निकालने के लिए दत्तात्रेय निरखीवाले की तीनों मृत बहनों के वारिस के हस्ताक्षर की कोर्ट में केस पेश करने के लिए जरूरत लगेगी एवं सभी के नाम से वारसा-उत्तराधिकारी प्रमाण पत्र के लिए जिला न्यायालय इन्दौर में केस फाइल करना होगा। इसमे सभी वारिस को भी आवेदक बनाना रहेगा। कोर्ट में लगने वाले केस खर्च में करीब 70 हजार रुपए देने होंगे। उन्होंने झांसे में लेकर रुपए प्राप्त कर लिए। लेकिन केस नहीं लगाया। जब पीड़ित ने 70 हजार रुपए वापस मांगे तो उक्त लोगों ने राशि देने में टालमटोल करते हुए कह दिया की केस हार गए हैं और 70 हजार रुपए वापस लौटने से मना कर दिया।

बुजुर्ग को यह लगी जानकारी

यशवंत और उनसे जुडें पुत्री वारिसो को शंका होने पर उनके द्वारा जानकारी निकालने पर पता चला की जिस वारसा प्रमाण पत्र का केस लगाने को लेकर जो 70 हज़ार रूपये साल 2022 में उक्त लोगो ने लिए थे वह केस 4 साल पहले ही 12 मार्च 2018 को कोर्ट में पेश कर चुके है। और 12 लाख रूपये की राशी को लेकर वारसा प्रमाण पत्र भी कोर्ट को गुमराह कर जिला न्यायालय से वारसा केस लगा कर प्राप्त कर चुके है। इसके अलावा उस उक्त लोगो ने मात्र पीड़ित की दोनों साली सुनीता पुंण्डे एवं मृत उल्का कुलकर्णी की और से उसकी दोनों पुत्रीगण कृतिका कुलकर्णी एवं स्वाती उपासनी को ही वारिसो के रूप में आवेदक बनाया एवं याचिका में यशंवत की पत्नी सुधा निरखीवाले उर्फ़ योगिता सिरालकर तीसरी बहन एवं उसकी पुत्रीगणों की जानकारी कोर्ट से छुपाते हुए फर्जीवाडा धोखाधड़ी करते हुए 12 लाख रूपये का वारसा प्रमाण पत्र भी कोर्ट से प्राप्त कर लिया।

इंदौर में थोरेसिक, वैस्कुलर सर्जरी पर एकदिनी नेशनल कॉन्फ्रेंस

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में थोरेसिक और वैस्कुलर सर्जरी की नई तकनीक पर चर्चा करने एसोसिएशन ऑफ़ थोरेसिक एंड वेस्क्युलर सर्जन्स ऑफ़ इंडिया 2024, एमपी एएसआई और एएसआई सिटी चैप्टर इंदौर द्वारा नेशनल कांफ्रेंस - एटीवीएसआईकॉन 2024 का 3 अगस्त को आयोजन किया जा रहा है। दोपहर 12:30 बजे इसका उद्घाटन होगाद्य एटीवीएसआई के नेशनल प्रेसिडेंट डॉ. अमिताभ गोयल ने बताया कि हमें विश्वास है कि एटीबीएसआई -2024 का आयोजन चिकित्सा जगत के साथ-साथ पूरे समाज के लिए लाभकारी होगा। एटीवीएसकॉन 2024 थोरेसिक और वैस्कुलर सर्जरी के क्षेत्र में नवीनतम विकास और तकनीकों से रूबरू होने का एक खास अवसर होगा। कांफ्रेंस में देश भर के जाने-माने सर्जन भाग ले रहे हैं। रिसर्च पेपर प्रेजेंटेशन और पोस्टर प्रेजेंटेशन के माध्यम से अपने ज्ञान और अनुभव साझा करेंगे। डॉ. गोयल ने बताया कि एटीवीएसआई के सीनियर सर्जन डॉ. वीके अग्रवाल को कांफ्रेंस में थोरेसिक और वैस्कुलर सर्जरी के क्षेत्र में अप्रतिम काम के लिए लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया जाएगा। डॉ. अंकुर माहेश्वरी (आयोजन अध्यक्ष), डॉ. अक्षय शर्मा (सचिव), डॉ. सुदेश शारदा (सचिव) ने बताया की कांफ्रेंस के माध्यम से हमने सारे भारत के सर्जंस को एक मंच पर लाने का प्रयास किया है। यह कांफ्रेंस थोरेसिक और वैस्कुलर सर्जरी के क्षेत्र में नवीनतम रुझानों और चुनौतियों पर चर्चा करने का एक मंच प्रदान करेगी। हम उम्मीद हैं कि कांफ्रेंस हमारे क्षेत्र में ज्ञान और कौशल को बढ़ावा देने में मदद करेगी।

इंदौर में ध्वस्त होती ट्रैफिक व्यवस्था

जंजीरावाला चौराहा पर जाम, 5 किमी रफ्तार से चले वाहन

इंदौर (एजेंसी)। शहर में जाम लगने की समस्या अब आम हो गई है। शुक्रवार शाम जंजीरावाला चौराहे पर बड़ा जाम लगा। 5 से 10 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से वाहन रेंगते रहे। इंडस्ट्री हाउस से रेस कोर्स रोड पार करने में करीब पौन घंटे का समय लगा। जनता परेशान होती रही। चौराहे पर जाम लगने के ये तीन कारण - इन कारणों पर ध्यान दिया जाए तो जनता को राहत मिले।

पहला - जंजीरावाला चौराहा से इंडस्ट्री हाउस बीच धोबी घाट ब्रिज के बॉटल नेक

के कारण यहां ट्रैफिक एक लेन पर आमने-सामने चलता है।

दूसरा - इसी मार्ग पर कमर्शियल कॉम्प्लेक्स में रेस्टोरेंट, कॉफी हाउस, दूध, होटल, रिफ्रेशमेंट सेंटर की दुकानों के बाहर सड़क पर ही लोग वाहन खड़े कर देते हैं।

तीसरा - 56 दुकान वाले टर्न पर भी कारें बीच सड़क पर खड़ी कर दी जाती हैं। यहां भी कई कमर्शियल कॉम्प्लेक्स में दुकानें हैं। शाम को पीक ऑवर्स में ट्रैफिक का भारी लोड जंजीरावाला चौराहे तक जाम लगा देता।

इंदौर में रुक-रुककर बूंदाबांदी

दिनभर में आधा इंच भी बारिश नहीं

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में पिछले कई दिनों से एक जैसा मौसम बना हुआ है। रोज सुबह बादल छाते हैं लेकिन तेज बारिश नहीं हो रही है। अगस्त माह की शुरुआत भी ऐसे ही मौसम से हुई है। सुबह से बादल छाए। इसके बाद रुक-रुककर बूंदाबांदी, रिमझिम होती रही। इसे बावजूद दिनभर में सिर्फ 10 मिमी बारिश हुई। मौसम वैज्ञानिकों ने दो दिनों बाद अच्छी बारिश के आसार जताए हैं। गुरुवार को दिन का तापमान 28.6 (0) डिग्री और रात का तापमान 22.4 (0) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था। शुक्रवार को दिनभर रिमझिम के चलते दिन का पारा 2 डिग्री लुढ़ककर 26.5 (-2) डिग्री सेल्सियस पर आ गया। रात का तापमान 22.4 (0) डिग्री पर स्थिर

रहा। पिछले 24 घंटे से दिन का तापमान औसत से 2 डिग्री कम बना हुआ है। शुक्रवार को दिनभर में 10 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई। इस सीजन में अब तक करीब 15 इंच बारिश ही हुई है। यह सीजन की औसत बारिश से 7 इंच कम है।

शहरी क्षेत्र में इस बार भले ही बारिश कम हुई है, लेकिन राहत की खबर यह है कि शहर को पीने का पानी देने वाले तालाबों के जलस्तर में सुधार हो रहा है। वजह यह है कि महू, देपालपुर, गौतमपुरा तरफ अच्छी बारिश हुई है। इससे इन तालाबों को भरने वाली चैनल में पानी आ गया है। अगस्त में 15-20 इंच पानी बरस गया तो सभी तालाब क्षमता के मुताबिक भर जाएंगे।

यानी इतना पानी तालाबों में आ जाने से अगले मई-जून की गर्मी में भी ये साथ देंगे।बहरहाल, शुक्रवार को दिनभर शहर में रुक-रुक कर बारिश होती रही। कभी तेज तो कभी बूंदाबांदी का दौर चला। बंगाल की खाड़ी में एक सिस्टम सक्रिय हो रहा है, जो शनिवार से और असरदार हो जाएगा। इस सिस्टम से शहर में अगले तीन से चार दिन बारिश होती रहेगी।

इंदौर में एआईसीटीएसएल बोर्ड का नया फैसला

सिटी बस का किराया 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ेगा, अब 10 ई-डबल डेकर बस चलाने का प्रस्ताव

इंदौर (एजेंसी)। शहर में लोक परिवहन का संचालन कर रही अटल इंदौर सिटी ट्रांसपोर्ट सर्विस (एआईसीटीएसएल) बोर्ड ने 20 से 30 फीसदी तक सिटी बसों के किराए में बढ़ोतरी का निर्णय लिया है। इसके अलावा माय बाइक (साइकिल) चलाना भी अब महंगा हो जाएगा। वहीं विस्तार के लिए स्थायी लोक परिवहन विशेषज्ञ की नियुक्ति की जाएगी। शहर में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 10 डबल डेकर बसें चलाई जाएंगी। स्कूल बसों को बीआरटीएस कॉरिडोर में प्रवेश देने के सुझाव पर भी सहमति बनी है। इसके लिए हाई कोर्ट से अनुमति ली जाएगी।

किराए में बढ़ोतरी के बाद 2 किमी के लिए 10 रुपए लगेंगे। अभी 5 रुपए लगते हैं। अधिकतम 22 किमी के लिए 35 रुपए खर्च करना होंगे, वर्तमान में 30 रुपए लिए जा रहे हैं। कंपनी ने जादूगरी दिखाते हुए किराए की दरें तो 5,10,15 रुपए ही रखी हैं, लेकिन किमी स्लैब में बदलाव करके किराए में वृद्धि की है।

इसके अलावा लोक परिवहन लास्ट माइल कनेक्टिविटी के लिए ई-बाईक व अन्य लोक परिवहन साधनों के साथ इंटीग्रेशन करेंगे और एप बेस्ड टैक्सी सर्विस शुरू की जाएगी। शुक्रवार को अध्यक्ष महापौर पुष्यमित्र भार्गव की अध्यक्षता में बोर्ड बैठक हुई। इसमें बताया गया कि कंपनी करीब 42 करोड़ रुपए के घाटे में है। संचालन लागत बढ़ती जा रही है। 2020 के बाद से

बसों के किराए में बढ़ोतरी नहीं की गई।

150 मिडी इलेक्ट्रिक बसों के संचालन से शहर के प्रदूषण में कमी आएगी

कंपनी के प्रबंध निदेशक और निगमायुक्त शिवम वर्मा ने बताया कि कंपनी में एक पूर्णकालीन लोक परिवहन विशेषज्ञ की नियुक्ति से संचालन और सुविधाओं के विस्तार में मदद मिलेगी। भविष्य में ग्रीन मोबेलिटी पर फोकस रहेगा। प्रधानमंत्री ई-बस सेवा में 150 मिडी इलेक्ट्रिक बसें मिली हैं। इनके संचालन से शहर के प्रदूषण में कमी आएगी और सुविधा भी बेहतर होगी।

सिटी बसों के साथ अन्य लोक परिवहन ई-रिक्शा, वैन और मैजिक को भी इंटीग्रेट किया जा रहा है। साथ ही इंटरनल रूट्स भी तैयार कर रहे हैं। बैठक में एआईसीटीएसएल बोर्ड के उपाध्यक्ष संभागायुक्त दीपक सिंह, निदेशक कलेक्टर आशीष सिंह, सीईओ मनोज पाठक एवं अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

पर्यटकों को डबल डेकर से कराएंगे इंदौर दर्शन

डबल डेकर बसों को इंदौर दर्शन और लोक परिवहन दोनों के लिए चलाया जाएगा। माई-बाइक स्टेशन से ई-बाइक या इलेक्ट्रिक व्हीकल भी चलाएंगे। इनका उपयोग लास्ट माइल कनेक्टिविटी यानी यात्रियों को उनके गंतव्य तक परिवहन सुविधा है। ग्रीन मोबिलिटी के लिए पीपीपी मॉडल पर होगा। पुरानी और स्क्रैप बसों की ई-नीलामी की जाएगी। साथ ही इनका उपयोग मोबाइल सुविधा जैसे स्मार्ट टॉयलेट, स्मार्ट स्कूल आदि योजनाओं के लिए भी किया जाएगा। ई-बसों के लिए चंदन नगर और नायता मुंडला में ई-चार्जिंग स्टेशन बनाए जाएंगे।

इंदौर का ग्रीन सिटी रेटिंग के लिए प्रस्ताव तैयार होगा

इंदौर को ग्रीन सिटी के लिए प्रस्ताव तैयार किया जाएगा। एआईसीटीएसएल कार्यालय में कलेक्टर आशीष सिंह की अध्यक्षता में चर्चा हुई। इसमें बताया सबसे स्वच्छ शहर, सतत अपशिष्ट प्रबंधन, वृक्षारोपण/हरित आवरण, जल तटस्थता, वायु गुणवत्ता में सुधार, कार्बन क्रेडिट, रिन्युअल एनर्जी, सतत परिवहन के मद्देनजर इंदौर ग्रीन सिटी का प्रबल दावेदार है।

लघुकथा

दीपक गिरकर

समीक्षक

विधा की वैचारिक विमर्श की समसामयिक कृति

सच को स्वीकारा जाना चाहिए। इतने वर्षों से लघुकथाएँ लिखी जा रही हैं और उनका शोर भी खूब है। पर है कोई पूर्णकालिक लघुकथाकार जिसने अपनी विधा के बल पर अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त कर, वही प्रतिष्ठा, प्रशंसा और सम्मान पाया हो, जो अनेक स्थापित बड़े कवियों, कहानीकारों, उपन्यासकारों और ललित निबंधकारों को प्राप्त है? संदर्भित पंक्तियाँ वरिष्ठ साहित्यकार सूर्यकांत नागर के लघुकथा वृत्तान्त के प्रथम आलेख स्वाधीनता की भावभूमि और लघुकथा की विकास-यात्रा से ली गई हैं।इस आलेख की अंतिम पंक्ति में लेखक लिखते हैं - नितांत व्यक्तिगत या वैयक्तिक अनुभव को लेकर लिखी गई लघुकथा का कोई महत्त्व नहीं। यदि लेखक निजी अनुभवों और संवेदनाओं को समष्टिगत और सार्वभौमिक नहीं बनाता तो उसका कोई मूल्य नहीं।

लघुकथा वृत्तान्त वरिष्ठ साहित्यकार सूर्यकांत नागर की इन दिनों चर्चित कृति है। सूर्यकांत नागर के अभी तक दस कहानी संग्रह, दो उपन्यास, दो व्यंग्य संग्रह, तीन निबंध संग्रह, दो आत्मकथात्मक संस्मरण, एक लघुकथा संग्रह, वरिष्ठ साहित्यकारों के साक्षात्कारों की कृति, साहित्यकारों के पत्रों का संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। सूर्यकांत नागर के सारस्वत अवदान का आकलन करते हुए देश की प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा इन्हें सम्मानित किया गया हैं। सूर्यकांत नागर के लेखन का सफ़र बहुत लंबा है। इनकी रचनाएँ निरंतर देश की लगभग सभी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। लघुकथा वृत्तान्त सूर्यकांत नागर की तीसवीं पुस्तक है। सूर्यकांत नागर एक वरिष्ठ साहित्यकार हैं जिन्होंने व्यंग्य, कहानी और उपन्यास, लघुकथा, निबंध, संस्मरण, साक्षात्कार इत्यादि सभी में अपनी लेखनी की चमक बिखेरी है। आपने कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया है। आपकी कई लघुकथाओं और कहानियों का कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है। इस पुस्तक के लेखक विमर्श केंद्रित सम-सामयिक आलेख लेखन, पुस्तक समीक्षाओं के साथ महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में बौद्धिक विमर्श, गोष्ठियों एवं सेमिनारों में, साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में काफी सक्रिय हैं।

इस पुस्तक में लेखक ने लघुकथा के विविध पक्षों का विशद विवेचन किया है। यह पुस्तक तीन खण्डों में विभाजित है। प्रथम खंड में सूर्यकांत नागर के लघुकथा की विकास यात्रा, रचनात्मकता में आ रहे बदलाव, आलोचना-शास्त्र, अध्यात्म, शिल्प और शैली, पुरुष और स्त्रीवादी सोच तथा नवोन्मेषी साहित्य जैसे 11 आलेख संकलित हैं। लेखक ने सभी आलेखों में लघुकथाओं के सन्दर्भ सहित विश्लेषणात्मक विवेचन किया है। द्वितीय खंड में सूर्यकांत नागर ने वरिष्ठ लघुकथाकारों श्यामसुंदर व्यास, बलराम, मधुदीप, विक्रम सोनी, रमेश बत्तरा, सतीश राठी और रूप देवगुण के व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रकाश डाला है। तीसरे खंड में नागर जी ने प्रतिष्ठित लघुकथाकारों अशोक भाटिया के लघुकथा संग्रह ÷अँधेरे में आँख÷ की लघुकथाओं, चैतन्य त्रिवेदी के लघुकथा संग्रह कथा की अफ़वाह÷ की लघुकथाओं और बलराम अग्रवाल के लघुकथा संग्रह आनेवाले दिन की लघुकथाओं की समीक्षा की हैं। इस पुस्तक का शीर्षक लघुकथा वृत्तान्त अत्यंत सार्थक है।

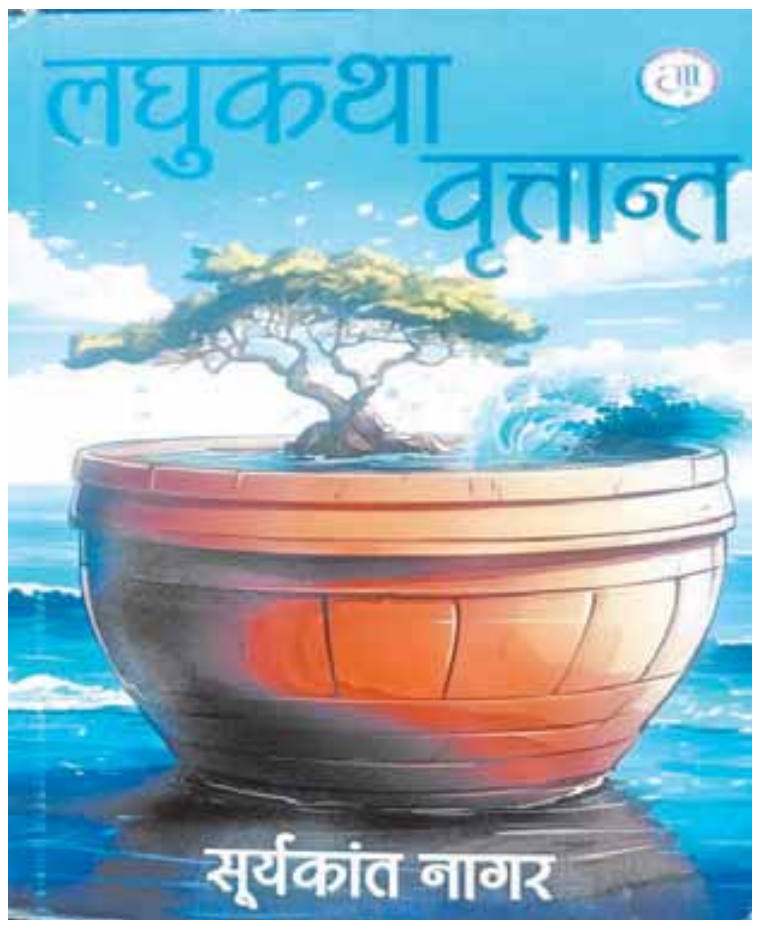

इस पुस्तक के आलेखों में लेखक ने लघुकथा की विकास यात्रा, लघुकथा का रचनात्मक पक्ष, लघुकथा में सृजन की दिशा, लघुकथा का परिदृश्य, नवोन्मेषी साहित्य सृजन, लघुकथा आलोचना, लघुकथा में अध्यात्म, लघुकथा की शिल्प और शैली, लघुकथा में नारी-विमर्श, लघुकथाओं में पुरुषवादी सोच, प्रेमचंद की कथाओं में आधुनिक दृष्टि इत्यादि विषयों पर गहरे विश्लेषण के साथ तर्कसम्मत, व्यावहारिक और ठोस चिंतनबहुत ही मुखर ढंग से प्रस्तुत किए है। पुस्तक के सभी आलेख सटीक, समसामयिक होने के साथ स्थाई महत्व के हैं। लेखक के अनुसार लघुकथा लेखन दुरूह और चुनौतीपूर्ण कार्य है। गागर में सागर भरने जैसा। पर सागर में विषैले सर्प, बिच्छू, मगरमच्छ, मछलियाँ और रत्न भी होते हैं। अत- भरते समय धान रखें कि जल के साथ केवल रत्न ही आएँ। यह भी कि गागर इतनी न भर जाए कि वजन न संभाल सके। बदलते परिवेश में लघुकथा घटना-लेखन मात्र नहीं रह गई है। सूर्यकांत नागर ने इस विधा की एक बहुत बड़ी समस्या की ओर इशारा किया है। वह समस्या है लघुकथा की आलोचना की विश्वसनीयता की। साहित्य की विभिन्न विधाओं में लघुकथा की आलोचना ही सर्वाधिक विवादास्पद और अविश्वनीय है। लघुकथा की समीक्षा, आलोचना की सबसे बड़ी समस्या है कि अभी तक लघुकथा की समीक्षा, आलोचना का कार्य लघुकथा-लेखक ही करते आए हैं, और कर रहे हैं।

इस कृति द्वारा सूर्यकांत नागरका समकालीन लघुकथा के संबंध में बहुआयामी चिन्तन मुखर हुआ है। वे समकालीन साहित्य पर गहरी समझ रखते हैं। लेखक ने अपने सभी आलेखों में सन्दर्भ के साथ उदाहरण भी दिए हैं और उनका गहरा विश्लेषण भी किया है। कुल मिलाकर यह कृति लघुकथा के विविध पक्षों से जुड़े मुद्दों की गहन पड़ताल करती है। पुस्तक पठनीय ही नहीं, चिन्तन मनन करने योग्य, देश के लघुकथाकारों को दिशा देती हुई और क्रियान्वयन का आह्वान करती वैचारिक विमर्श की समसामयिक कृति है। लघुकथा में शोध करने वाले विद्यार्थियों के लिए तो यह कृति विशेष रूप से लाभदायक सिद्ध होगी। 'लघुकथा वृत्तान्त' समकालीन लघुकथा के विविध पक्षों का सशक्त दस्तावेज़ है।

पुस्तक - लघुकथा वृत्तान्त(लघुकथा के विविध पक्षों का विशद विवेचन)
लेखक - सूर्यकांत नागर
प्रकाशक = अद्विक पब्लिकेशन, 41 हसनपुर, आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज गाँव, दिल्ली- 110092
आईएसबीएन - 978-81-19206-50-6
मूल्य -190 रूपए

कविता

चेक

राकेश राणा

काल बेल बजी
नौकरानी ने दरवाजा खोलते पूछा
कौन?
क्या शरण सर है?
नहीं है।
कहाँ गए?
बोलिये क्या काम है?
उनका कुरियर है
दे दीजिए।
नहीं ये चेक है पालिसी का।
रुको!
बाईसा पापाजी के नाम का चेक आया है।
कहाँ है?
बाहर खड़ा है।
लाओ भैया डाक।
शरण साहब कहाँ है?
मैं उनकी बहू हूँ मुझे दे दो।
फिर लिफाफा फटा चेक देखा सोलह लाख का।
चेक ड्रेसिंग टेबल पर रखा।
जल्दी-जल्दी तैयार हुई।
महिनों बाद चल दी वृध्दाश्रम।

वही तो है बाज़ीगर ....

अनुपमा अनुश्री

कौन है वह बाज़ीगर !
जिसने मुट्ठी में भर चाँद , तारों
सितारों को हरसू बिखरा दिया हैं
कुछ को मेरी अलकों
पलकों पर सजा दिया हैं।

कुछ जुगनूओं की रोशनी लुटा दी है
कुछ सुरीले गीतों को हवा दी है
मखमली कालीनों पर चमचमाती
बूँदों की लड़ी बिछा दी है
आसमां में रंगों की झालर लहरा दी है।

नए सोतो से धवल धाराएँ फूट पड़ी हैं
मन में उत्साह की फुलझड़ियाँ खिली है
फुनगी पर बैठी गौरैया चहक रही है
अभ्र स्वागतातुर कोयलिया कुहुक रही है।

मयूर पंखों में सारे रंगों को सजा
उन्हें नृत्य प्रवीण बना दिया है
वीथिका,वन, उपवन ,मन में
सावनी उमंगों को जगा दिया है।

लघुकथा

गोल्डेन जुबली

डॉ. मोनिका राज

कुछ ही दिनों में रामलखन प्रसाद और सावित्री देवी की शादी को पचास वर्ष पूरे होने वाले थे। सभी बेटे-बहु और पोते-पोतियों के आगमन से आंगन बेहद गुलज़ार हो रहा था। सभी सदस्य कार्यक्रम में आने वाले मेहमानों की सूचि बनाने और खाने के मेन्यू तैयार करने में लगे थे। सावित्री देवी भी बच्चों के उत्साह देख मन ही मन पुलकित हुई जा रही थी। पर रामलखन प्रसाद जी सबस अलग-थलग बैठे कुछ सोच-विचार करने में लगे थे।

अचानक उनके दिमाग मे एक युक्ति सूझी। प्रसन्नचित्त भाव से वे उठकर बच्चों के पास आये और तीनों बेटों को संबोधित करते हुए पूछा, इस गोल्डन जुबली के आयोजन में कितना खर्चा आएगा? तीनों बेटे ने सवालिया निगाहों से एक-दूसरे की ओर देखा। तब बड़े बेटे ने कहा,÷यही कुछ चार-पांच लाख रुपये। पर, यह सब आप क्यों पूछ रहे हैं, पिताजी?

रामलखन प्रसाद जी ने कहा,बच्चों, मुझे पता है तुमसभी के मन में ढेरों सवाल होंगे। इसलिए अब मैं तुमसभी को एकसाथ ही बता देता हूँ कि मैं इतने दिनों से खामोश क्यों था और मेरे दिमाग में क्या चल रहा था। तुमसभी इस बात से भली भांति वाकिफ़ हो कि हमारे गांव का निचला हिस्सा हर साल वर्षा ऋतु में कोसी के जलस्तर बढ़ने की वजह से डूब जाता है। इधर में सभी समाचार-पत्रों में भी यह खबर बार-बार आ रही है। कईयों के घर डूब गए और कईयों के घर की छप्पर कच्ची होने की वजह से उनके घर में पानी भर गया। इधर रामधन जी से मेरी बात हो रही थी तो पता चला कि लोग ऊँचे स्थल की ओर बढ़ चले हैं परंतु उन्हें खाने-रहने की तत्काल बहुत-सी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।÷ कहते-कहते वे थोड़ा रुके।

बच्चों में आगे की बात सुनने को लेकर उत्सुकता दिखी। फिर उन्होंने आगे कहा, मैं यह सोच रहा था कि क्यों न इस आयोजन के लिए जमा रकम में मैं अपने बचत के रखे दो लाख रुपये और मिला दूं तो एक अच्छी रकम हो जाएगी। इससे उनलोगों के राशन तथा कुछ घरों के छप्परों की मरम्मत की व्यवस्था भी हो जाएगी। यहां तो एक दिन के आयोजन में ही पांच लाख रुपये खर्च हो जाएंगे लेकिन हम वहां इन रुपये से कई घरों की मदद कर पाएंगे। गोल्डन जुबली मनाने की असल मंशा तो हम सबकी खुशियां और ढेरों दुआएं ही थी न। तो क्यों न इस आयोजन को असल खुशियों और दुआओं संग मनाया जाए। सभी ने हामी भरी। तो चलो, सब फटाफट अपना समान बांधो। हमसब गांव निकल रहे हैं। मां-पिताजी की गोल्डन जुबली हम अपने गांव में हमारे अपनो के साथ मनाएंगे÷, बड़े बेटे ने कहा और सभी मिलकर आगे की तैयारी करने लग गए। राम लखन प्रसाद और सावित्री जी का चेहरा संतोष से दमक रहा था। सचमुच यह गोल्डेन जुबली कई मायने में खास होने जा रही थी।

लघुकथा

दोस्त

अविनाश अग्निहोत्री

अरे वाह भाई,अभी परसों ही तो सभी दोस्त मिले थे और आज फिर कांफ्रेंस काल।शोभित ने चहकते हुए सौम्य से कहा तब वह बोला हां एक जरूरी बात तुम लोगों को बतानी थी इसलिए सभी को जोड़ा है। पर इसमें नयन को क्यों नही जोड़ा। शोभित ने आश्चर्य के साथ पूछा।तब वह बोला उस सुदामा के बारे में ही तो तुम लोगों से बात करनी थी तो भला उसे कैसे जोड़ता।

उसकी बात सुनकर शोभित समेत सभी सोच में पड़ गए।फिर सौम्य कुछ गंभीर स्वर में बोला आज सुबह नयन का फोन मेरे पास आया था।

उसने बताया की उसकी पत्नी की अचानक लगी चोट के कारण पैर की हड्डी टूट गई है।जिसका उसे तत्काल आपरेशन कराना होगा।और उसने अभी अभी अपने बच्चों की स्कूल फीस जमा की है।तो वो चाहता है कि हम सभी इस बुरे समय में उसकी मदद करे।

पर हम सभी जानते है कि अपने स्कूल के दिनों से आज तक,दोस्ती के नाम पर हम ही उसे ढोते आए है।जब भी कोई खर्चे का मौका आता है।वह अपने हाथ पीछे खींच लेता है।

इस बार भी उसे पैसे देने का मतलब नुकसान ही है।इसीलिए मैंने तो उसे सोचकर बताने का कहकर टाल दिया है। तुम लोगो का क्या विचार है।

तब उसकी बात सुन शोभित खामोशी तोड़ते हुए बोला, सौम्य लगता है दुकान पर सामान तोलते तोलते तू हमारी दोस्ती

को भी नफा और नुकसान के तराजू से तोलने लगा है।

अरे आज नयन को हमारी बहुत जरूरत है तो हमें डटकर उसके साथ खड़े रहना चाहिए।आखिर हम उसके दोस्त है कोई व्यापारी नही कि उसकी इस परिस्थिति में भी अपना फायदा नुकसान देंखे।

फिर शोभित की इस बात पर सभी ने सहमति दी और देखते ही देखते नयन के मोबाइल का मेसेज बॉक्स दोस्तों की मदद से भर उठा।

रास्ते की सारी अलामतें देख लेना

अमर खनूजा चड्ढा

रास्ते की सारी अलामतें देख लेना
जमाने की दो चार बातें सह लेना
रखना खयाल अपने ज़मीर का
इम्तिहान भी लेंगें कई तेरे सब्र का
कामयाबी से तेरी ये जल भुन पड़ेंगे
साम दाम दंड का सहारा भी लेंगे
तू सच है तो रब का सहारा ही लेना
नीयत पे अपनी ना असर होने देना

कि मिलेंगे राजे बहुत फ़क़ीर भी
काफ़िर मिलेंगे बतेरे ज़हीन भी
दिखेंगें हरक़दम जहान में
शान शौक़त मुफ़लिसी के दौर भी
रास्ते में होंगे कई फंदे शिकंजे
नाइंसाफ़ी बेक़द्री भेड़चाल हर तरह की
कहीं शराफ़त इंसानियत दोस्ती भी
भेड़ की खाल में मिलेंगे भेड़िये भी

पर कुछ दिल के वारिस हैं रूहों की ज़मीं में
समेटे अपनी आरजू दिलों की दिली में
ना मिलन की मस्ती ना दुख बिछड़न में
ना करते सौदा सुलफ़ ना रहें बन्दगी में
ये सुच्चे हैं मोती ना परख की ज़रूरत
ना दिल दुखाना दे कोई भी क़ीमत
ना करना फ़रेब ना धोखा ही देना
दर पर इनके माथा झुका लेना!

कहानी

रमेश मनोहरा

बीच का रास्ता

रिश्ते से वह भाभी लगती थी, सगी भाभी तो नहीं, मगर वे मेरे छोटे मामा के लड़के अविनाश की पत्नी विमला थी। 'थी' शब्द का इस्तेमाल इसलिए कर रहा हूं कि अभी अभी हम उन्हें श्मशान में खाक करके आये हैं। कैंसर से ग्रसित विमला भाभी दो साल तक जीवन मृत्यु के बीच झूलती रहीं। अंतत- मौत जीत गई, मौत किसी से नहीं हारी है। अविनाश भैया सेवानिवृत्त शिक्षक हैं, उन्होंने अपनी पत्नी अर्थात विमला भाभी के इलाज हेतु कोई कसर नहीं छोड़ी थी, फिर भी वे उसे जीवन नहीं दे सके।

परिवार और करीब के रिश्तेदार सब आंगन में दरी बिछाकर इस दुख की घड़ी में सहभागी बने हुए थे। इसी बीच बड़े मामाजी जमनाप्रसाद बार-बार अविनाश की ओर देख रहे थे। इस आस से कि अब अगला कार्यक्रम तय करना है, मगर भैया भाभी के गम में खामोश बैठे थे। शायद भाभी का गम कई सालों तक परेशान करता रहेगा। जो स्वाभाविक है। उम्र के इस पड़ाव पर आकर पत्नी और पति को एक दूसरे की जरूरत होती है।ऐसे समय पत्नी साथ छोड़कर चली जाए तब उस पुरूष को बहुत अधिक पछतावा होता है। शायद यही पछतावा अविनाश भैया को अभी से खाये जा रहा था, मगर यह तो कुदरत का चक्र है, जिसकी जितनी उम्र लिखी होती है, उतने ही साल वो जिंदा रहता है। बीमारी केवल बहाना होती है, ऊपर वाले के हाथ मे डोर होती है, हम सब पृथ्वी पर रहने वाली कठपुतियां होती हैं, आखिर बड़े मामा अविनाश अपना मौन तोड़ते हुए बोले- अरे अविनाश अब आगे के कार्यक्रम के बारे में क्या सोचा है।

मगर अविनाश ने कोई जवाब नहीं दिया। ऐसा भी हो सकता है उन्होंने बड़े मामाजी की बात न सुनी हो, ऐसा लग रहा था, जैसे शून्य में देख रहे हो, तब बड़े मामा फिर बोले- तुमने जवाब नहीं दिया अविनाश?

क्या जवाब दूं। इस बार अविनाश भैया जरा खुले, उनकी बात से लगा कि वे भीतर ही भीतर भाभी का गम अब भी पाले हुए हैं, मामाजी अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बोले- मेरा मतलब यह है अविनाश विमला का तुम्हारे साथ इतना ही साथ था, अब उसके त्रयोदशी कार्यक्रम की रूपरेखा तय करना है, इस बारे में कह रहा हूं।

इस बारे में मैंने नहीं सोचा है, टका सा जवाब देकर अविनाश भैया ने अपनी बात कह दी।

तब मामा बोले- अरे समाज के रीति रिवाज के अनुसार पगड़ी की रस्म अदायगी करना पड़ेगी न, मैं उसकी बात कर रहा हूं।

पगड़ी की बात तो अब मैं सोच भी नहीं सकता।

अरे क्यों भला? यह तो समाज की परंपरा है, समझाते हुए मामा बोले।

आज तुम्हारे पिता नहीं है, इसका यह मतलब नहीं है कि तुम सारे ही रीति रिवाजों को भी भूल जाओ, फिर पगड़ी की रस्म अदा नहीं करोगे, तब समाज में क्या संदेश जायेगा।

समाज ने उस समय नहीं सोचा, जब विमला कैंसर से ग्रस्त थी, दो साल में उसके लिए ढाई लाख रुपए इलाज में खर्च कर दिये। रिटायरमेंट का मिला आधा पैसा खर्च हो गया, अब शेष जिंदगी के लिए खर्च नहीं करना चाहता हूं, अत- पगड़ी की रस्म नहीं करना चाहता हूं। कहकर अविनाश भैया ने अपना फैसला सुना दिया। अविनाश भैया के फैसले को सुनकर सभी खामोश हो गए। किसी के मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला। अविनाश भैया ने यह कहकर सभी रास्ते बंद कर दिये थे। सारे रिश्तेदार और परिचित जानते थे, अविनाश भैया ने विमला भाभी के इलाज के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी। खूब पैसा खर्च किया। ऐसे में अविनाश ने साहसिक फैसला लेकर सबको चौंका दिया, तब कोई नहीं रिश्तेदार बोला। सब अविनाश भैया के इस फैसले के आगे नतमस्तक हो गये। फिर भी मामाजी को इस अवसर पर बोलने का हक था। अत- वे बोले देख अविनाश, यह फैसला लेकर तूने अच्छा नहीं किया। यदि पगड़ी की रस्म नहीं करेगा, विमला की आत्मा भटकेगी, वह तुझे परेशान करेगी, इसलिए मैं कहता हूं, इस बारे में एक बार पुन- विचार कर लो।

मैंने जो फैसला लिया है, सोच-समझकर लिया है, फिर रहा सवाल पगड़ी की रस्म नहीं करूंगा तो विमला की आत्मा भटकेगी, यह अंधविश्वास है। शरीर से एक बार प्राण निकल जाते हैं, वह आत्मा किसी दूसरे शरीर में प्रवेश कर लेती है, मैं नहीं मानता ऐसी ढोंग भरी परंपरा को।

अरे युगों से चली आ रही समाज की परंपराओं को ढोंग बता रहा है, जरा तीखे स्वर में मामाजी बोले- तुझे पगड़ी की रस्म अदा नहीं करना हो तो मत कर, मगर परंपराओं पर कुठाराघात मत कर। बुजुर्गों ने जो हमारे पुरखे कहलाते हैं, समाज के जो रीति रिवाज बनाए थे, बड़े सोच समझकर बनाये थे।

हां बनाए थे, जिस समय ये रीति रिवाज बने थे, उस वक्त इनकी आवश्यकता थी। आज समय परिवर्तनशील है। हम कब तक इन सड़ी गली मान्यताओं को ढोते रहेंगे। आगे आकर किसी न किसी को इसकी पहल करना होगी। अविनाश भैया ने जब यह समझाया तब मामाजी को लगा, उनकी मान्यता पर सीधा सीधा हमला है। परिवार में वे बड़े हैं, उनका भी दायित्व बनता है, जब वे पगड़ी की रस्म नहीं करेंगे तो लोग उन्हें कहेंगे, परिवार में बड़े हो, अविनाश को समझा नहीं सकते थे। जरा कड़कती आवाज में बोले- देख अविनाश मैं परिवार में बड़ा हूं, बड़ा होने के नाते तुझे तो लोग कुछ नहीं कहेंगे, सब मुझे ही कहेंगे, तू अपने साथ मेरी भी नाक क्यों कटवाना चाहता है।

आप क्यों नहीं समझते हैं कि हम कब तक पुरानी मान्यताओं पर चलते रहेंगे। जितना तुम समझ रहे हो अविनाश इसे तोडने की यह इतना आसान नहीं है, पगड़ी की रस्म तो करनी पड़ेगी, समाज हमारी खिल्ली उड़ायेगा। समाज तो दोनों हाथों में लड्डू रखता है। अविनाश, समझाते हुए बोला- रस्मो रिवाज के अनुसार कितना भी अच्छा खिला दो फिर भी किसी चीज में मीन मेख निकालेगा, रसोई अच्छी बनेगी तो तारीफ कर देगा, रसोई अच्छी नहीं बनी तो आलोचना करेगा, हर हाल में आलोचना सहना है। अविनाश समझाते हुए बोला।

मतलब तुम्हारा फैसला है, तुम तेरहवीं की रस्म नहीं करोगे। बड़े मामाजी उसी तरह नाराजी से बोले।

प्रत्युत्तर में अविनाश भैया ने कोई जवाब नहीं दिया। वातावरण में तनाव बना रहा। अविनाश जिन मान्यताओं को दफनाना चाहता है, उसकी जड़ें समाज में इतनी गहरी जम चुकी हैं कि चाहकर भी हम नहीं उखाड़ सकेंगे। मृत्यु भोज किसी किसी समाज में बंद जरूर हुआ है, मगर आज भी इसकी जड़ें गहरी जमी हुई हैं। आज भी मृत्यु भोज की परंपरा कायम है, जब उसने कोई जवाब नहीं दिया, तब मामाजी ने फिर पूछा- ठीक है अविनाश जो परंपरा वर्षों से चली आ रही है, उसे तुम तोड़ रहे हो, तुमने बहुत वीरता का काम किया है, मैं तुझसे खुश हूं।

उनकी बात में गहरा व्यंग्य था, यह अविनाश ने एहसास कर लिया था, अब रिश्तेदारों के सामने उनकी यह लड़ाई और नंगी न हो इसलिए। फूफाजी बोले- इस लड़ाई का हल नहीं निकलेगा। प्याज के छिलके की तरह छिलके उतरते जायेंगे, अब कोई बीच का रास्ता निकाला जाए।

फूफाजी ने यह कहकर सबको चिंतन में डाल दिया, बीच का ऐसा कौन सा रास्ता हो, जिससे हल निकल जाए। सब इस बारे में गहन चिंतन करने लगे, मगर किसी नतीजे पर न पहुंच सके। थोड़ी देर बाद अविनाश खुद बोले- मैंने बीच का रास्ता खोज लिया।

वो कैसे? बड़े मामाजी बोले।

13वीं की रस्म होगी, प्रसन्नता से अविनाश बोले- रसोई में मिठाई नहीं बनाना चाहता हूं।

अरे मिठाई के बिना रसोई नहीं कहलाती है। फूफाजी ने सुझाव दिया।

मैं जानता हूं फूफाजी, मगर पुरानी मान्यताओं को तोडने के लिए शुरूआत इससे की जाए तो आप लोगों का क्या विचार है अविनाश ने कहा। हां अविनाश मैं तुम्हारी बात से सहमत हूं, किसी तरह की कोई मिठाई नहीं बनेगी। कहकर मामाजी के दिमाग में परिवर्तन का मोड़ आ गया। बहरहाल कुंठित वातावरण में प्रेम के अंकुर फूटे। भारी वातावरण अब हल्का हो चुका था, फिर वे तेरहवीं कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने लगे। (विभूति फीचर्स)

सुबह सवेरे मीडिया एल. एल. पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा.लि., राउखेड़ी, देवासरोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईंकृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक-उमेश त्रिवेदी
संपादक(म.प्र.)-गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक-अजय बोकिल
स्थानीय संपादक-हेमंत पाल
प्रबंध संपादक-अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNINo.MPHIN/2015/66040,
MobileNo.:09893032101
Email-subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

कला की पूरी पाठशाला थे कलाकार राजा रवि वर्मा

कुछ समय पूर्व की बात है रामायण के फिर से दूरदर्शन पर शुरू होने के साथ ही राम के गुणों की चर्चा, राम के संस्कार, भाइयों के बीच का दर्शन, गुणों-अवगुणों पर तार्किक बहस जैसे एक बार फिर से दबा हुआ मर्म उजागिर हो गया है। रामायण से संस्कार ग्रहण कर चुकी एक पीढ़ी जो लगभग अपने उम्र के कई बसंत पार कर चुकी है, बच्चों के संस्कार को लेकर चिंतित थी, उनके बाद की वह पीढ़ी, नई पीढ़ी जो पाश्चात्यता के विचारों के साथ तैयार हुई, उसमें चाह कर भी वह संस्कार नहीं डाल पाए और आए दिन नए-नए मुद्दों को लेकर कुछ ऐसी फिल्में भी बनीं जो भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में सफल रहीं। जहाँ बच्चे जब गर्मियों की छुट्टियों में अपने घर जाते हैं तो उन्हें यह कहते आसानी से सुना जा सकता है कि हम तो दादी के घर जा रहे हैं, जहाँ दादी बस मनोरंजन की एक चीज बनकर रह गई है, जहाँ दादा बच्चों के बिगड़ते रूपों को देखकर घर के एक कोने में दुबक कर बस रो लेते हैं और अपने बच्चों के संस्कार को लेकर चिंतित है ऐसे दौर में रामायण के शुरू होते ही अचानक से बड़े स्तर पर परिवर्तन देखने को मिला। यही परिवर्तन मिला था राजा रवि वर्मा के चित्रों, विशेषतः धार्मिक चित्रों को देखकर उस जमाने में जब ईश्वर की पहुँच मूर्त रूप से भारत के घर-घर में हो गया था रवि वर्मा के प्रेस में बने उनके अपने चित्रों के हजारों प्रतियों के रूप में।

अब हम कहें कि साहित्य और कला की प्रासंगिकता क्या है? क्या यह प्रश्न बचकाना नहीं लगता? जिस तरीके से लोग रामायण में पूरे जी-जान से अपने आप को प्रस्तुत कर देने वाले राम और सीता के रूप में अरुण गोविल तथा दीपिका को अपने भगवान के रूप में मानते हैं, उनके कदमों पर चलना चाहते हैं क्या सभी के जेहन में राम और सीता की यह तस्वीर नहीं बस गई है? आज लगभग सभी लोग राम और सीता को इसी रूप में पसंद कर रहे हैं इसी रूप में पूज रहे हैं। एक समय था जब राजपूत शैली, मुगल शैली अपने उद्देश्य को खो रही थी चित्रकार स्थिर होकर चित्रकारी नहीं कर पा रहे थे चित्र नहीं बना पा रहे थे कलाकारों को अपना जीवन यापन करना भी भारी पड़ रहा था, कला को लेकर अस्थिरता का माहौल व्याप्त था। भारतीय कला की स्थिति डाँवाडोल थी हालांकि मध्यकाल में, मुगल शैली में, कंपनी शैली में तथा और भी कई शैलियों में देवी-देवताओं चित्र बने, लेकिन उनमें ऐसे गुणों की कमी थी कि वे लोगों के दिलों में जगह बना पाते, उन सबों में लोक संस्कृति, स्थानीयता तथा बेडौलता की छाप नजर आती थी ऐसी कला नहीं मिल पा रही थी जो पूरे देश पर एक साथ अपना छाप छोड़ सके, उसी बीच आधुनिक कला में या कला के आधुनिक दौर में लोगों को देवी-देवताओं के एक नए रूप से परिचित करवाया गया। लोगों को देवी-देवताओं के सम्मोहक चित्रों से परिचित करवाने वाले कलाकार थे राजा रवि वर्मा। इनके द्वारा ही लीथोग्राफ प्रेस की स्थापना की गयी फलतः अधिक और सस्ते चित्रों का निर्माण होने से भारत के अधिकतर घरों में इनके चित्रों की पहुँच हुई, इनके चित्रों में लोगों को अपने भगवान नजर आये और उनकी पूजा भी हुई। अपने चित्रों के विषय और सजीवता के बल पर ही रवि वर्मा भारतीय जनमानस के दिलों पर राज करने लगे थे कहना गलत न होगा कि रवि वर्मा जन-जन के चित्रकार हो गये थे हालांकि विरोध हुआ, बहुत विरोध हुआ। अच्छे कार्यों का विरोध होता भी है विरोध होना ही अच्छाई का परिचायक है उनका भी हुआ लेकिन वह हारे नहीं चलते रहे। कला समीक्षक फ्रैंक नोरिस का शब्द जो कला अंत में लोगों द्वारा स्वीकृत नहीं होती वह जीवित नहीं रहती सार्थक सा हुआ जान पड़ता है क्योंकि समीक्षकों द्वारा नकारे गये चित्रकार रवि वर्मा लोगों द्वारा स्वीकृत हुए फलतः उनकी कला आज भी जीवित है और हमेशा ही जीवित रहेगी।

समय शायद 1862 का रहा होगा बालक रविवर्मा के चाचा राजा वर्मा राज भवन की दीवारों पर तंजौर शैली में चित्र बना रहे थे अचानक उन्हें कुछ विशेष कारण से थोड़ी देर के लिए बाहर जाना पड़ा एकांत पाकर अंतस के प्रबल भावों के बल पर बालक रवि वर्मा जो मात्र 14 वर्ष का था बेखौफ, निडर हो चित्र में रंग भरना शुरू कर दिया साथ ही बचे हुए रेखा कार्यों को भी पूरा कर दिया जो एक आश्चर्य जनक बात थी। वापस आने पर चित्र देखते ही राजा वर्मा आश्चर्य से भाव विभोर हो उठे उनके मन में बालक रवि वर्मा को लेकर उम्मीदों का एक पहाड़ उभर आया और मन ही मन वो रवि वर्मा को भविष्य का महान चित्रकार मान बैठे जो आगे चलकर शत-प्रतिशत खरा सिद्ध हुआ। जिसके लिए उनके चाचा हमेशा ही रवि वर्मा के साथ खड़े रहे। उनके प्रयासों के बल पर ही इनको त्रावनकोर के महाराजा से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ प्रतिफल ये हुआ कि दरबारी चित्रकार रामास्वामी नायडू द्वारा इन्हें जलरंग की बारीकियाँ समझने का मौका मिला। जल्द ही ये जलरंग में दक्षता हासिल करने में भी सफल रहे। कला के प्रति रवि वर्मा की ललक और तीव्र पकड़ को देखकर रामास्वामी नायडू तथा ब्रिटिश शबीह चित्रकार थियोडोर जॉनसन दोनों ने रवि वर्मा को तैल रंग में प्रशिक्षण देनें से साफ मना कर दिया। हाँ जॉनसन की तरफ से बस इतनी अनुमति थी कि पूर्ण हुए चित्र को बालक निहार सकता है उसका कथन था कि चित्र निर्माण प्रक्रिया के समय वो अपने आस-पास किसी को भी नहीं रहने देता ध्यान भंग की खाल ओढ़कर वो खुद को इस प्रक्रिया से अलग कर लिया था बावजूद इसके अधिकतर लोगों का मानना था कि रवि वर्मा को तैल रंग की शिक्षा थियोडोर जॉनसन से ही मिली। मामला संशयग्रस्त है।

जॉनसन ने खुद को बचाने का यह कदम ईर्ष्या बस उठाया या रवि वर्मा के आगे भविष्य में उसे अपनी जमीन खिसकती नजर आई इसलिए कह पाना मुश्किल है पर एक बात तो साफ है कि मुश्किल हालात के बाद ही खुशनुमा प्रभात का आनंद है अतः मुश्किल घड़ी में भी हाथ पैर मारना बंद नहीं करना चाहिए युवा रवि वर्मा ने भी यही किया और मालाबार स्कूल ऑफ पेंटिंग में भी दाखिला के प्रयास में जा लगे। यहाँ भी निराशा ही हाथ लगी। अब तक अपने अथक प्रयासों और लगातार निराश होने के चलते मानसिक रूप से कमजोर महसूस करने लगे थे रवि वर्मा पर चित्रकला में नवीन सृजन में निरंतरता बनी रही। इस बीच भी इनके चित्र लगातार बनते रहे और अथक प्रयास, एकाग्रचित मन के प्रयासों का फल तथा महाराजा के सहयोग से पाश्चात्य कला चित्रों पर प्राप्त कुछ चित्रकला संबंधित पुस्तकों के चित्रों को देखकर, गहन अध्ययन कर ये चित्रों की बारीकियों को पकड़ पाये और प्रयत्न के बल पर ही खुद एक संस्थान बन बैठे। देखते ही देखते इनके चित्र अंतर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनियों में भी सराहे जाने लगे और स्वर्ण पदक हासिल करने में सफल रहे। स्थानीय शैलियों का भी उन्होंने अध्ययन किया, परिचित चेहरों में दिव्यता भर कर वही रूप देवी देवताओं के हेतु प्रयोग किया। उनके अधिकतर चित्रों में सुगंधा है, जिसको लेकर रवि वर्मा के बारे में तरह-तरह की बातें हवा हुई थी और जिसकी वजह से वर्मा जी को कई जगह घेरा भी गया। चित्र सीता हरण में उन्होंने सीता के रुप में अपने पोती की छवि को अंकित किया है।

अब तक उनके काम का सिलसिला जोर पकड़ चुका था पर भटकन भी कम न थी विषय को लेकर ऊहापोह जैसा वातावरण विद्यमान था। उनका मॉडल उनके आसपास से ही होता था वह एक ऐसे कलाकार थे जो कैनवास पर ऑयल कलर में काम करने वाले पहले भारतीय कलाकार बनें। भारतीय कला जगत में, तैल रंगीय यथार्थता को लाने का श्रेय भी इन्हीं को जाता है। यूरोपीय यथार्थवादी शैली को भारतीय रुप में प्रस्तुत कर देना धीरे-धीरे इनके लिए आसान होता गया। इनके चित्रों में शबीह चित्र, सामाजिक संदर्भों युक्त चित्र और जग जाहिर धार्मिक चित्र प्रमुख थे। राष्ट्रीयता संबन्धी इनके चित्रों से अंग्रेज भी खार खाये हुए थे बाल गंगाधर तिलक, रानी लक्ष्मीबाई, महाराणा प्रताप और शिवाजी जैसे जननायकों के चित्र बनाकर वर्मा जी लोगों मे देशप्रेम की भावना को भी उजागर करने में सफल हुए और आंदोलनकारी लोगों के बीच भी सम्मानीय बन गये साथ ही महंगे कलाकार भी, शबीह चित्र बनवाने के लिए लोग इनके हाँ करने का इंतजार किया करते थे आगे चलकर उन्हें एशिया का रेम्ब्रा भी कहा जानें लगा।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव में प्रबंध निदेशक है)

सावि , न फ्लाप, न हिट बस ठीक-ठीक कलेक्शन देगी

सावि ÷,जिस एक फ्रेंच फिल्म ' पू एला ' के आधार पर बनाई गई है ,वो बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप रही थी जबकि इसके विपरीत इसकी अंग्रेजी रीमेक 'द नेक्स्ट थ्री डेज' सुपरहिट रही थी। अभिनय देव इसके पहले बतौर निर्देशक - ' देल्ही बेली ' बना चुके हैं और यह बता चुके हैं कि परम्परागत हिन्दी फिल्मों के प्रति कोई खास लगाव नहीं है अतः ' सावि ' न तो मूल फ्रैच फिल्म के मुताबिक फ्लाप रहने वाली है न अँग्रेजी संस्करण जैसी हिट,बस एक ठीक-ठीक कलेक्शन वाली फिल्म है । फिल्म 'सावि' बुनियादी तौर पर ही एक कमजोर फिल्म है । विदेश में पति को बचाने की कोशिशों में लगी सावि के सामने जो चुनौती है, उसमें कोई विलेन नहीं है और परिस्थितियों को खलनायक बनाने की परवेज शेख की कोशिश काफी कमजोर साबित हुई है ।विदेशी धरती पर देशी दर्शकों को लुभाने वाली कहानियों के साथ सबसे बड़ी दिक्कत ये है कि फिल्म देखते समय इससे कोई जुड़ाव लोगों को महसूस नहीं होता है। यही सावि के साथ भी सम्भव है ।

यह फिल्म एक ऐसी महिला की कहानी है जो अपने पति को बचाने की कोशिश कर रही है। सावी सचदेव (दिव्या खोसला) एक गृहिणी है जो अपने पति नकुल सचदेव (हर्षवर्धन राणे) के साथ लिवरपूल में रहती है, जो एक निर्माण कम्पनी में काम करता है, और बेटा आदि (मैराज कक्कड़) है। जब नकुल-सावी। का जीवन ठीक चल रहा होता है तभी ,नकुल को डीआई आयशा हसन (हिमांशी चौधरी) द्वारा अपने बॉस स्टेफनी फाउलर की हत्या के लिए गिरफ्तार कर लिया जाता है। नकुल पुलिस से गुहार लगाता है कि वह निर्दोष है। हालांकि, उसके खिलाफ जबरदस्त सबूत हैं। नकुल जब झुकने से इनकार कर देता है तब सावी अपने पति को जेल से बाहर निकालने का फैसला करती है। जेल से भागने के बारे में शोध करते समय, वह जॉयदीप पॉल (अनिल कपूर) द्वारा लिखी गई किताब पढ़ती है। वह रिकॉर्ड सात बार जेल से भाग चुका है! सावी टिप्स लेने के लिए उससे मिलने की कोशिश भी करती है । परिस्थितियां ही इस फिल्म में खलनायक हैं मगर फिल्म में इस तथ्य को ठीक से विकसित हीं किया गया है ।

फिल्म में अभिनय देव का निर्देशन अच्छा है। उन्होंने दो घण्टे छः मिनट की फिल्म को ठीक-ठीक सम्हाला है । और कुछ पर हास्य का इस्तेमाल फिल्म के मनोरंजन मूल्य को बढ़ाता है।फिल्म की कहानी आशाजनक है। परवेज शेख और असीम अरोड़ा की पटकथा भी गतिशील है ।सावी फिल्म के संगीत की यदि हम बात करें तो उस ज़माने को गुजरे अरसा हो गया है जब गीत-संगीत कालजयी होते थे । सार्थक और मन को छूने वाले गीत सुमधुर संगीत के साथ विलक्षण प्रभाव की सृष्टि करते थे फिर भी सावी के गीत -संगीत हालिया रिलीज फ़िल्में के ओसत संगीत से बित्ता भर ऊँचे ही है । फिल्म का एकमात्र साउण्ड ट्रेक-'खोल पिंजरा...' सबसे अलग और आकर्षक है । रोमांचक फिल्मों में पार्श्वसंगीत कथानक को आगे बढ़ाने और संपुष्ट करने में सहायक होता है । फिल्म में अर्कदीप करमाकर का बैकग्राउंड म्यूजिकक्षप्रभावी है। चिन्मय सालस्कर की सिनेमैटोग्राफी साफ-सुथरी है।विदेशी लोकेशन पर सिनेमोटोग्राफी हमेशा से एक चुनौती रही है और चिन्मय ने यूके की सभी लोकेशंस को अच्छी तरह से शूट किया है। प्रियंका भट्ट का वेशभूषा संयोजन सामान्य है। सुनील निग्वेकर का प्रोडक्शन डिजाइन यथार्थवादी है जबकि शान मोहम्मद का सम्पादन शानदार है।

फिल्म में अभिनय का जहाँ तक सवाल है दिव्या खोसला एक अच्छी अभिनेत्री है और वह अभिनय भी अच्छा करती हैं, लेकिन उनके अभिनय की अपनी सीमाएं हैं। मनोज कुमार की तरह बार बार अपना हाथ चेहरे पर लाने की उनकी आदत है। नाट्यशास्त्र के नौ रसों का प्रकटन चेहरे के भावों से कैसे किया जा सकता है, यह अभी उनको नहीं आता है । 'सावि' की भूमिका ऐसी है कि उसमें इस चरित्र को पल पल रंग बदलती दुनिया के हिसाब से ढलना होता है और दिव्या खोसला इसमें असफल रही है।हर्षवर्धन राणे हमेशा की तरह भरोसेमंद हैं और उन्होंने अच्छा अभिनय किया है। वे काफी डैशिंग भी लग रहे हैं। अनिल कपूर की एंट्री थोड़ी देर से हुई है। उनका स्क्रीन टाइम सीमित है, फिर भी वे अपने मनोरंजक अभिनय से इसकी भरपाई कर देते हैं। मैराज कक्कड़ ठीक-ठाक हैं। हिमांशी चौधरी अपनी छाप छोड़ती हैं। रागेश्वरी लूंबा स्वरूप (सिमरित) के लिए भी यही बात लागू होती है, हालांकि उनके किरदार को ठीक से नहीं निभाया गया है।

कुल मिलाकर, सावी अपने कथानक, अभिनय और एक आकर्षक दूसरे भाग के कारण सफल है, हालांकि सिनेमाई स्वतंत्रताएं खेल बिगाड़ देती हैं। बॉक्स ऑफिस पर, यह एक औसत फिल्म होगी।

धर्म-संस्कृति

परविंदर शर्मा

सहायक प्रोफेसर भगवान श्री परशुराम चेयर जगत गुरु नानक पंजाब स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी पटियाला

कैसे हुई कावड़ यात्रा की शुरुआत और क्या हैं कथाएं

भारत समृद्ध संस्कृति और विरासत की भूमि माना जाता है क्योंकि भारतीय संस्कृति के अंदर अनेकों प्रकार की मान्यताएं प्रचलित है उनमें से एक (कावड़ यात्रा) है जो कि भगवान शिव के साथ जुड़ी हुई है। जिसमें करोड़ों शिव के भक्त मां गंगा (हरिद्वार) से जल ग्रहण करके शिवरात्रि के दिन भगवान शिव को जल चढ़ाते हैं। सबसे पहले हमें यह जानना जरूरी हैं कि यह कावड़ यात्रा में कावड़ लाने की परंपरा कब शुरू हुई और इसका अर्थ क्या है 'कावड़' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत शब्द 'कपाट' से मानी जाती है जिसका अर्थ है कि कंधे पर वस्तर जा पिछ्वाड़ा रखने वाला। इस संदर्भ में हम कह सकते हैं कि कावड़ वह है कि जो शारदा के साथ अपनी पीठ पर बिना किसी लालच के कुछ लेकर जाने वाला। कावड़ यात्रा में भी भगवान भोले शिव शंकर के भक्त कंधे के बल जल को लाकर भगवान श्री शिव को समर्पित करते है।

मान्यताओं के अनुसार भगवान श्री परशुराम जी ने सबसे पहले कावड़ यात्रा की शुरुआत की थी जो सदर बिल्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय के डॉ. पंकज झा ने बताया है कि भगवान परशुराम की यह कथा प्रचलित पोथियां में भी मिलती है क्योंकि भगवान श्री परशुराम जी शिव के सबसे प्रिय भक्त थे। माना जाता है कि भगवान परशुराम जी ने आराध्य देव शिव के नियमित पूजन के लिए पूरा महादेव (जनपद बागवत) में मंदिर की स्थापना की। परशुराम ने कावड़ में गंगाजल लाकर पूजन कर कावड़ परंपरा की शुरुआत की थी और मान्यताओं के अनुसार बाद में यह परंपरा शुरू हुई। कुछ मान्यताओं के अनुसार यह कहा जाता है कि हर की पैड़ी से सबसे पहला कावड़ त्रेता युग में भगवान परशुराम जी ने स्वयं अपने कंधे पर उठाई थी तभी से हर साल लगातार अनेकों श्रद्धालु मां गंगा से जल लाकर भगवान शिव का पूजन करते हैं। जब भगवान श्री परशुराम जी ने शिवलिंगों की स्थापना के लिए गंगा से पत्थर निकाले तो पाषाण करुण

कंदन करने लगे। वे कहने लगे कि उन्हें मां गंगा से अलग ना करो। तब परशुराम जी ने वचन दिया की पत्थरों को शिवलिंग के रूप में यहां-यहां स्थापित किया जाएगा वहां से हर श्रावण मास शिव भक्त हर की पौड़ी के गंगाजल से जल लाकर वहां-वहां चल कर जलभिषेक करेंगे और हुआ भी कुछ ऐसा ही। तब से लेकर आज तक अनेकों ही श्रद्धालु जहां-जहां शिवलिंग स्थापित है वहां पर जल चढ़ाते हैं और भगवान शिव भी अपने भक्तों की मनोकामनाओं को पूरा करते है। अब माना जाता है कि अनेक राजाओं के दलन के बाद भगवान श्री परशुराम जी ने यज्ञ करने का निर्णय लिया। इस यज्ञ का आयोजन भी बागपत के पास वर्तमान पूरा महादेव मंदिर परिसर में किया गया था जिसके बारे में जानकारी धार्मिक ग्रंथ मिलती है।

कुछ कथाएं जो पुराणों में भी उपलब्ध है उनके अनुसार जब समुद्र मंथन के बाद समुद्र से निकला विष भगवान शिव ने ग्रहण किया तब विष की ज्वाला से उनका शरीर जलने लगा। विष को गले में रोकने से उनका कंठ नीला पड़ गया और वह नीलकंठ भी कहलाए। कुछ और मान्यताओं के अनुसार विष से उत्पन्न ज्वाला को शांत करने के लिए रावण ने जल अभिषेक सावन के महीने में लाकर भगवान शिव के ऊपर चढ़ाया। यहीं से कावड़ यात्रा की शुरुआत मानी जाती है। कुछ भक्तों का मानना है कि मातृ पितृ भक्त जो विश्व भर में सबसे प्रिय सेवा भावना करने वाले श्रवण कुमार ने नेत्रहीन माता-पिता को चारों दिशाओं में यात्रा करवाई थी। यात्राओं के समय उन्होंने कावड़ के रूप में दोनों पलड़ों में बैठाया था और वह सावन मास में हरिद्वार आए और माता-पिता को ब्रह्मकुंड में स्नान करवाया इस के बाद कावड़ यात्रा की शुरुआत हुई थी। अनेकों घटनाओं का हवाला इसी प्रकार मिलता है।

हम कह सकते हैं कि भगवान शिव का प्रिय सावन मास आते ही प्रकृति चारों तरफ से खिल उठती है हर तरफ हरियाली ही हरियाली नजर आती है। आस्था प्रेम और विश्वास के साथ इस पावन महीने में त्योहारों की भी शुरुआत होती है सावन मास में कावड़ यात्रा को याद ना किया जाए तो सावन मास अधूरा रहता नजर आता है क्योंकि भगवान शिव के अनेकों ही भक्त अपने शिव शंभू को प्रसन्न करने के लिए कंधो में कावड़ लिए जाते नजर आते हैं भगवान शिव जो कि हमेशा ही अपने भक्तों की चिंता करते हैं और उनके कष्ट को अपना कष्ट समझ कर दूर करते हैं। यह कांवड़ियों का अपने शिव के प्रति प्रेम और भक्ति की भक्ति ही है जो वह अनेकों मील पैदल यात्रा करके कावड़ के रूप में जल लाकर अपने स्थान पर वापस आते हैं। और भोले शिव शंकर पर चढ़ाते है। अध्ययन के माध्यम से पता चलता है कि यात्रा मार्ग पर करीब 300 से ज्यादा स्वागत मंच बनाए जाते हैं जो कि गिनीज बुक में भी दर्ज है। खोज से पता चला कि 2022 में 15 दिनों में एक करोड़ 70 लाख श्रद्धालु कावड़ लाने के लिए गए थे। जिससे यह पता चलता है कि भारत के अन्दर लोगों की भगवान शिव के प्रति कितनी शारदा है। यह तब संभव हुआ जब भगवान श्री परशुराम जी ने शिव के प्रति अपनी आत्म संयम की भावना को दिखाया। जिन्होंने एक सच्चे भक्त और अपने सच्चे गुरु के लिए शारदा के साथ यह कार्य किया था। जिसके चलते हुए जीवन में भी सफलता प्राप्त की थी। इसी प्रकार आज के लोगों के धर्म के प्रति और संस्कृति के साथ आस्तिकता रख कर अपने जीवन को सफल बना सकते हैं।

लघुकथा

आँखों में चमक जाग उठी

वैदेही कोठारी

स्वतंत्र पत्रकार

संध्या होते-होते शांत हवा ने विकराल आंधी का रूप धारण कर लिया था। पेड़ पर बैठी चिड़िया , घोंसले में अंडे को दबाए बैठी थी। चारो ओर पसरता गहराता अंधकार और आंधी, जंगल को तबाह करना चाह रही थी। पत्तों की सर-सर, आवाजें जंगल में गूंज रही थी। जानवर खुद की जान बचाते इधर-उधर भागे जा रहे थे? पक्षियों का दर्दनाक कोलाहल मचा हुआ था ।

चिड़िया भय से काँप रही थी।चिड़िया ने अपने पँख और फैला लिए।

तेज बिजली कड़कने के साथ-साथ ओलों की बारिश भी शुरू हो गई। तभी एक तेज आंधी आई। उस आंधी ने उसे उड़ा कर, उसके घोंसले से बहुत दूर फेंक दिया।

सूरज की पहली किरण में जब उसे होश आया।

वह हिम्मत करके उठी, उसने चारो ओर देखा।

सब कुछ बिखर चुका था। वह इधर-उधर अंडो को ढूंढ़ने लगी। वह आंधी की मार से घायल हो चुकी थी। उसका एक पँख टूट चूका था। वह उड़ने की कोशिश करते -करते, थक गई।

उसकी नजरें कुछ तलाश करने लगी।

अचानक उसकी आँखों में चमक जाग उठी।

थोड़ी दूर पर ही दो अंडे टूट रहे थे, जिसमे से चीं.. चीं की आवाजें आ रही थीं।

सर्वे में मिले 144 प्रकार के पक्षी, कई दुर्लभ प्रजाति के भी

संजय द्विवेदी

बैतूल। जिले का दक्षिण वन मंडल वन्य जीवों की दृष्टि से बेहद समृद्ध है। यहां पर 144 प्रकार के पक्षी पाए जाते हैं। इनमें भी कुछ तो ऐसे हैं जो संकटग्रस्त प्रजातियों में शुमार हैं। इसके अलावा कई दुर्लभ पक्षी पहली बार इस वन मंडल में नजर आए हैं। यह वास्तविकता इस वन मंडल पक्षियों के दूसरे सर्वे और पहले समर के पक्षी सर्वे में सामने आई है। यह सर्वे डीएफओ (दक्षिण) विजयानन्तम टीआर की पहल पर हुआ। सर्वे 19 जून से 24 जून 2024 तक बैंगलोर एवं इंदौर से आये बर्ड एक्सपर्ट प्रवर मौर्य, विपुल लुनिया एवं उनकी टीम द्वारा किया गया। टीम द्वारा दक्षिण बैतूल (सा.) वनमंडल के विभिन्न परिक्षेत्रों आमला, ताप्ती, भैसदेही एवं सावलमेढ़ा (सा.) में पक्षी सर्वेक्षण किया गया।

इसलिए कराया गया सर्वे- पक्षियों का सर्वे इसलिए कराया गया ताकि स्थानीय पक्षियों के साथ-साथ गर्मियों के मौसम में आने वाले प्रवासी पक्षियों को भी रिकॉर्ड किया जा सके। पक्षी सर्वेक्षण में दस्तावेजीकरण के लिए ई-बर्ड एप का उपयोग किया गया।

सर्वे में यह बातें आई सामने- इस बार सर्वेक्षण के दौरान कुल 144 पक्षी प्रजातियों को रिकॉर्ड किया

गया। जिसमें से कई पक्षी प्रजातियां ऐसी भी है जो मध्यप्रदेश में बहुत कम जगहों पर देखी गयी है। इनमें से 12 प्रजाति के पक्षी प्रवासी पक्षी है। जो गर्मियों के मौसम में आ गए थे।

दूसरों के घोंसलों में देते अंडे- कुक्कू परिवार के पक्षी दूसरे प्रजाति के पक्षियों के घोंसलों में अंडे देने के लिए जाना जाता है। कुक्कू परिवार के 08 प्रजातियों को रिकॉर्ड किया गया। जिनमे बैंडेड बे कुक्कू और फोर्क टेल्ड ड्रॉंगो कुक्कू भी शामिल है। इसके अलावा वाटर पाक हेयर क्रेस्टेड ड्रांगों और रडी-ब्रेस्टेड क्रेक पक्षी इबर्ड पर बैतूल से पहली बार रिकॉर्ड किये गए है।

बच्चों के साथ दिखे यह पक्षी- इसके अलावा ओरिएण्टल प्रेटिनकोल प्रजाति के पक्षी छोटे बच्चों के साथ दिखाई दिए। जिससे पता चलता है कि जिले के वेटलैंड्स इनके प्रजनन के लिए अनुकूल पर्यावास है। यह पक्षी भी बैतूल जिले से इबर्ड पर पहली बार रिकॉर्ड हुआ है। 144 पक्षियों की इस सूची में कुछ पक्षी ऐसे भी हैं जो आईयुसीएन की संकटग्रस्त प्रजातियों की सूची में शामिल हैं।

पक्षियों के लिए उपयुक्त आवास- सतपुड़ा पठार पर स्थित दक्षिण बैतूल (सा.) वनमंडल विविध प्रकार के वन्यजीवों से समृद्ध है। वन, नदी, तालाब, खेत और मैदान विविध प्रकार के पक्षियों के लिए उपयुक्त आवास है। जिनमें बहुत बड़ी संख्या में पक्षी अपना बसेरा बसाते हैं। इनके अलावा कई पक्षी प्रजातियां लम्बी दूरी तय करके प्रवास पर जिले में मेहमान बन कर आते हैं।

पहला सर्वे पिछले साल ठंड के मौसम में हुआ- दक्षिण बैतूल (सा.) वनमंडल के डीएफओ (दक्षिण) विजयानन्तम टीआर ने दैनिक सुबह सवेरे को बताया कि वन मंडल द्वारा पहला पक्षी सर्वेक्षण पिछले वर्ष ठंड के मौसम में करवाया था। प्राय सर्वेक्षण ठंड एवं गर्मी के मौसम में करवाया जाता है। पिछले वर्ष के सर्वेक्षण से ठंड के मौसम में आने वाले प्रवासी पक्षियों को भी दर्ज किया गया था। पक्षी सर्वेक्षण के दौरान कुल 185 पक्षी प्रजातियों को रिकॉर्ड किया गया था।

पक्षियों के प्रति जागरूकता बढ़ाना- इस सर्वेक्षण का उद्देश्य पक्षियों का बेसलाइन डेटा बनाने के साथ साथ पक्षियों के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। दक्षिण बैतूल (सा.) वनमंडल की योजना इस तरह के सर्वेक्षण नियमित अंतराल पर करवाते रहने की है। जिससे की पक्षियों का डाटा और समृद्ध किया जा सके।

स्वतंत्रता दिवस की परेड में विशेष अतिथि होंगे तुषार

बैतूल। ग्राम भड़ूस के एक विद्यार्थी को स्वतंत्रता दिवस की परेड में विशेष आमंत्रित अतिथि के रूप में शामिल होने भारत सरकार ने देश की राजधानी दिल्ली आमंत्रित किया है। स्कूल से मिली जानकारी के अनुसार गत 23 जनवरी को जवाहर नवोदय विद्यालय प्रभात पट्टन में आयोजित जिला स्तरीय प्रेरणा उत्सव प्रतियोगिता जिले के सभी हाई

स्कूल एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सभी केंद्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय, सीएम राइस, पीएमश्री स्कूल के विद्यार्थियों ने भाग लिया था। संकुल केंद्र भड़ूस के हायर सेकेण्डरी स्कूल भड़ूस से तुषार पवार सहित कुल 7 विद्यार्थियों ने विभिन्न विधाओं में भाग लिया था। लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के उपरांत इन सभी छात्र-छात्राओं में मात्र 2 विद्यार्थियों का चयन गुजरात के वडनगर में 7 दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण हेतु चयन हुआ था। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भड़ूस से भाग लेने वाले कक्षा 12वीं के छात्र तुषार पिता गणपति पवार का गुजरात शैक्षणिक यात्रा हेतु चयन हुआ था। वर्तमान में केंद्र सरकार द्वारा प्रेरणा प्रोग्राम के बैच 1 से बैच 21 तक के प्रतिभागियों को स्वतंत्रता दिवस की परेड में विशेष गेस्ट के रूप में आमंत्रित किया गया है। 13 अगस्त को तुषार अपने गार्जियन टीचर के साथ बैतूल से दिल्ली के लिए रवाना होगा। यहां उल्लेखनीय है कि प्रेरणा उत्सव में विद्यालय के छात्रों को तैयारी करवाने में शाला के उच्च माध्यमिक शिक्षक उमेश शर्मा शा. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भड़ूस का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। छात्र तुषार पवार को शाला परिवार एवं ग्रामवासियों की ओर से शुभकामनाएं एवं बधाई दी गई।

कुन्बी समाज संगठन केन्द्रीय मंत्री सहित पांचों विधायकों का आज करेगा सम्मान

बैतूल। क्षत्रिय लोणारी कुन्बी समाज सेवा संगठन आज 4 अगस्त 2024 रविवार को केंद्रीय राज्य मंत्री सहित पाँचों का विधायकों का सम्मान करेंगा। सम्मान कार्यक्रम शाम 6.30 बजे से जे.एच. कालेज के सभागार में आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डीडी उईके केन्द्रीय राज्य मंत्री होंगे। वही अध्यक्षता श्रीमती प्रभा ताई वाग्रदे, विशेष अतिथि में विधायक चंद्रशेखर देशमुख, हेमन्त खंडेलवाल, डॉ.योगेश पंडाग्रे ,महेन्द्र सिंह चौहान, गंगाबाई उईके, पार्वती बारस्कर नपाध्यक्ष बैतूल, करूणा देशमुख, सुखदेव पांसे पूर्व कैबिनेट मंत्री, पी.आर.बोडखे, डॉ.राजेन्द्र देशमुख, एम.आर.चढोकार, अजाब राव पाटनकर होगे। इस अवसर पर क्षत्रिय लोणारी कुन्बी समाज सेवा संगठन की नई कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह भी आयोजित किया गया है, जिसमें सभी पदाधिकारिये को शपथ दिलाई जायेंगी। सेवा संगठन के नये जिलाध्यक्ष यशवंत मुन्ना मानकर ने सभी स्वजातीय बंधुओ से आग्रह किया है वे कार्यक्रम में सहपरिवार पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाए।

भारतीय किसान संघ ने मंडी प्रांगण में किया तहसील स्तर का किसान सम्मेलन

बैतूल/भौंरा। मंडी प्रांगण शाहपुर में बुधवार को भारतीय किसान संघ द्वारा तहसील स्तर का किसान सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन की शुरुआत ध्वजारोहण, भारत माता एवं भगवान बलराम के पूजन के साथ की गई। तत्पश्चात संगठन की रीति-नीति के अनुसार कार्यक्रम को संपन्न किया गया। सम्मेलन में पुरानी तहसील समिति को समाप्त कर नवीन तहसील इकाई का गठन किया गया। जिसमे राधेलाल घंकरे को पुनः तहसील अध्यक्ष चुना गया, जबकि रोहित शुक्ला उर्फ मोनू शुक्ला को तहसील मंत्री का दायित्व सौंपा गया। दो शहर के तहसील मंत्री भी नियुक्त किए गए। नवीन गठित तहसील की कार्यकारिणी के अध्यक्ष, मंत्री एवं अन्य सदस्यों का तिलक लगाकर सम्मान किया गया। नवनियुक्त तहसील अध्यक्ष राधेलाल घंकरे ने अपने उद्बोधन में कहा, मैं भारतीय किसान संघ का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने मुझ पर विश्वास जताया और इस महत्वपूर्ण पद का दायित्व सौंपा। मैं सभी किसानों के हितों की रक्षा और संगठन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पूरी निष्ठा से कार्य करूंगा। सम्मेलन में उपस्थित सभी किसानों का भी तिलक लगाकर सम्मान किया गया। कार्यक्रम के अंत में भारतीय किसान संघ की ओर से शाहपुर तहसील इकाई द्वारा जिले से पधारे किसान संघ के कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर मंडी प्रांगण में वृक्षारोपण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष अशोक पटेल, कोषाध्यक्ष लक्ष्मी नारायण मालवीय, रामावतार वर्मा, सुमित वर्मा, गुलाबचंद वर्मा और शिवराज अटोल सहित अन्य कार्यकर्ता भी उपस्थित थे।

केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री उइके श्रद्धांजलि कार्यक्रम में हुए शामिल

बैतूल। केन्द्रीय राज्य मंत्री एवं सांसद दुर्गादास उईके शनिवार को बैतूल पहुंचे। श्री उईके बैतूल प्रवास के दौरान चिचोली ब्लाक के ग्राम रतनपुर में वरिष्ठ भाजपा नेता, बैतूल जिला सांसद प्रतिनिधि स्वर्गीय विजय शुक्ला के श्रद्धांजलि कार्यक्रम में शामिल हुए। इस दौरान केंद्रीय राज्यमंत्री ने स्व. शुक्ला के छायाचित्र के समक्ष पुष्प अर्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की तथा शोक संतप्त परिवारजनों को ढांढस बंधाया। इस अवसर पर आमला डॉ. योगेश पंडाग्रे, वरिष्ठ पर्यावरणविद मोहन नागर, पूर्व जिलाध्यक्ष जितेन्द्र वर्मा, पूर्व विधायक शिवप्रसाद राठौर उपस्थित थे।

केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री उईके प्रातः 8.30 बजे आमला स्थित हसलपुर पहुंचेगे। गायत्री परिवार के साथ वृक्ष गंगा अभियान के तहत पौधारोपण कार्यक्रम में उपस्थित होगे। इसके पश्चात गेहूं बारसा, मुलताई के लिए दोपहर 11 बजे रवाना होगे। गेहूं बारसा में सर्व मंगल कावड़ यात्रा के स्वागत कार्यक्रम में उपस्थित होकर दोपहर 1 बजे सर्किट हाऊस बैतूल पहुंचेगे। शाम 7 बजे जेएच कॉलेज स्थित ऑडिटोरियम में सम्मान एवं शपथ समारोह में उपस्थित होगे। कार्यक्रम पश्चात रात्रि विश्राम निवास स्थान पर रहेगा। श्री उईके 5 अगस्त 2024 प्रातः 5 बजे बैतूल से नागपुर होते हुए दिल्ली के लिए प्रस्थान करेगे।

15 दिन की वर्षा के बाद भी खाली पड़ी सिंचाई परियोजनाएं

43 छोटे बांधों में हुई मात्र दो प्रतिशत जल आवक, 5 मध्य सिंचाई परियोजना(बड़े बांध)

बैतूल/ मुलताई। मुलताई के पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण एक सप्ताह की बरसात में ओवरफ्लो हो जाने वाली मुलताई क्षेत्र की मध्य एवं लघु सिंचाई परियोजना इस वर्ष 15 दिनों की वर्षा के बाद भी खाली पड़ी है। जिसने सिंचाई विभाग और क्षेत्र के किसानों की नींद उड़ा दी है। मुलताई क्षेत्र में 15 दिनों से निरंतर वर्षा हो रही है

किंतु रिमझिम बरसात के चलते जहां बांधों तक पानी नहीं पहुंच पा रहा है। वही फसलों की स्थिति भी बिगड़ने लगी है कीड़े और इल्लीयों ने फसलों को नुकसान पहुंचाना प्रारंभ कर दिया है।

ताप्ती सरोवर की अब भी खाली है चार से अधिक सीढ़ियां- पिछले वर्ष ताप्ती सरोवर अब तक अनेक बार ओवरफ्लो हो गया था किंतु इस वर्ष अब तक ताप्ती सरोवर अपनी जल संग्रह क्षमता को छू नहीं पाया है ।सरोवर की अब भी 4 से अधिक सीढ़ियां खाली है। ताप्ती सरोवर को

अच्छी वर्षा का सूचक माना जाता है। यह सरोवर नगरीय क्षेत्र के जल स्त्रोतों का आधार भी है यही कारण है कि जब ताप्ती सरोवर ओवरफ्लो होता है नगर में जश्न का माहौल होता है। किंतु इस वर्ष लंबी वर्ष के बावजूद भी ताप्ती एवं शनि सरोवर जल आवक का इंतजार कर रहे है ताकि अपनी सीमाओं को लांघकर अपनी गंतव्य की ओर निकल सके।

43 लघु सिंचाई परियोजनाओं में मात्र 2त्न जल आवक- क्षेत्र की पांच प्रमुख मध्य सिंचाई परियोजना तो ठीक है किंतु क्षेत्र की 43 लघु सिंचाई परियोजनाओं ने चिंताएं बढ़ा दी है। अब तक कुल 43 लघु सिंचाई परियोजनाओं में मात्र 2त्न ही जलावक हो पाई है। घाट पिपरिया छोटा बांध इन लघु सिंचाई परियोजनाओं में अपवाद है जो की फुल टैंक हो गया है और ओवरफ्लो हो रहा है।

मध्य सिंचाई परियोजना में 13त्न से लेकर अधिकतम 69त्न जल आवक मध्य सिंचाई परियोजना सबसे कम 13.30 प्रतिशत निरगुड़, सबसे अधिक इसके अलावा मध्यम सिंचाई परियोजनाओं की बात करें तो निरगुड़ बांध 13.30त्न, चांदोरा बांध 21. 34 प्रतिशत, बुडाला मध्यम सिंचाई परियोजना 15.25त्न प्रतिशत जल की आवक हो सकी है। वर्धा माध्यम परियोजना की बात करें तो यहां आशा जनक जलावक हुई है 48.86त्न एवं पारसढ़ोह बांध 69.96त्न प्रतिशत जल आवक हुई है।

इनका कहना

लघु सिंचाई परियोजनाओं में इस वर्ष मात्र 2त्न जल आवक हुई है पिछले वर्ष की तुलना में कम है चिंता का विषय तो है किंतु अभी समय है। सिंचाई विभाग सभी परिस्थितियों पर नजर रखे हुए हैं, और अमला अलर्ट पर है।

-सी. एल .मरकाम,
एसडीओ जल संसाधन विभाग मुलताई

श्री राजेंद्र सूरी शासकीय महाविद्यालय सरदारपुर- राजगढ़ में एल्युमिनाई मीट सम्पन्न

धार। श्री राजेंद्र सूरी शासकीय महाविद्यालय सरदारपुर राजगढ़ में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर एल एस अलावा की अध्यक्षता एवं नैक पर प्रभारी प्रोफेसर सरिता जैन के मार्गदर्शन में भूतपूर्व विद्यार्थियों की बैठक (एल्युमिनाई मीट)सम्पन्न हुई ।

कार्यक्रम के प्रारंभ में महाविद्यालय परिवार ने भूतपूर्व विद्यार्थियों का स्वागत एवं अभिनन्दन किया। कार्यक्रम संचालिका डॉ सपना कासलीवाल ने महाविद्यालय के वीजन एवं मिशन की जानकारी दी तथा बैठक का एजेण्डा बताया । पंजीयन प्रभारी डॉ रंजना पाटीदार, बसंती मुजाल्दा, डॉ रीना खांडेकर ने पंजीयन किया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में प्राचार्य प्रो एल एस अलावा ने सभी भूतपूर्व छात्रों का स्वागत एवं अभिनंदन किया तथा अध्यक्षीय उदबोधन दिया । प्रो.सरिता जैन एवं डॉ सपना कासलीवाल ने मीटिंग के एजेण्डा एवं मनोनयन प्रक्रिया बताई। बैठक में सर्वानुमति से समिति के अध्यक्ष पद पर अनोखीलाल पाटीदार(एहमद) उपाध्यक्ष चंदन शर्मा (राजगढ़) सचिव राजेश शर्मा (धार),सह सचिव कुमारी काजल मारू(बोला) कोषाध्यक्ष सुनील मिस्त्री (सरदारपुर)चुने गए। कार्यकारिणी सदस्य नरसिंह पाटीदार ,(एहमद) नंदकिशोर त्रिवेदी(भोपावर) अंकित कछावा (सरदारपुर)तथा सुनीता भाभर(सरदारपुर)को चुना गया ।

प्रोफेसर आर के जैन ने भी भूतपूर्व छात्रों को संबोधित किया।समिति के पदाधिकारियों के साथ सुनीता भाभर, सरस्वती मकवाना तथा दीपक बामनिया भी उपस्थित थे ये तीनों पूर्व विद्यार्थी खेलकूद की उभरती हुई प्रतिभाए है।

कार्यक्रम में डॉ राकेश शिंदे,प्रो सुरेंद्र रावत, लालिमा विजयवर्गीय, डॉ निधि बाजपेई, स्नेहलता- मण्डलोई, कमलेश चौहान,अजय राठौर, महेंद्र अलावा, दीपेश डांगी इंदरसिंह आदि उपस्थित थे , सभी पूर्व छात्रों ने महाविद्यालय के विकास गुणवत्ता सुधार, शुद्ध पेयजल, स्वच्छता और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्धता जाहिर की , महाविद्यालय के सर्वांगीण विकास के लिए हर संभव सहयोग करने की बात कही,

कार्यक्रम का संचालन डॉ सपना कासलीवाल ने किया आभार डॉ ममता दास ने माना । जानकारी एल्युमिनाई समिति प्रभारी डॉ डी एस मुजाल्दा ने दी।

अस्थि बाधित दिव्यांगजन बच्चों के निःशुल्क ऑपरेशन के लिए चिन्हांकन शिविर उत्कृष्ट विद्यालय देवास में संपन्न

देवास / मोहन वर्मा। निमाड़ महासंघ विकास समिति एवं जिला प्रशासन देवास द्वारा ÷अस्थिबाधित दिव्यांगता जांच शिविर÷का आयोजन शासकीय उत्कृष्ट माध्यमिक विद्यालय देवास में किया गया ।

निमाड़ महासंघ सचिव कृष्णकांत रोकड़े ने संबोधित करते हुए बताया कि जिले के संवेदनशील कलेक्टर श्री ऋषव गुप्ता की मानवीय पहल के कारण जिले के अस्थिबाधितों का जांच एवं निःशुल्क ऑपरेशन शिविर आयोजित किया गया ।उन्होंने कहा कि निमाड़ महासंघ प्रमुख संजय रोकड़े के दिव्यांगता रहित मध्य प्रदेश के सपने को साकार करने सम्पूर्ण प्रदेश में

शिविर आयोजित करके प्रदेश को दिव्यांगता से मुक्त करने का लक्ष्य है ।

दिव्यागजनों का परीक्षण देश के जाने माने डॉ.प्रमोद पी.नीमा ने किया। डॉ.नीमा ने इस अवसर पर कहा कि अस्थि रोग व जोड़ प्रत्यारोपण कहा कि दिव्यांगता देश के माथे पर कलंक है इसे जड़ से मिटाने तक ऐसे अभियान चलते रहना चाहिए। शिविर में चिकित्सकों द्वारा 57 दिव्यांगजनों को सर्जरी किए योग्य पाया गया। शिविर में कलेक्टर श्री ऋषभ गुप्ता ने संबोधित करते हुए कहा कि शिविर में देवास जिले की सभी तहसीलों से आए 97 दिव्यांगजनों का रजिस्ट्रेशन किया गया। जिसमे से चिकित्सकों द्वारा 57 दिव्यांगजनों को सर्जरी किए जाने के लिए चिन्हित किया गया उल्लेखनीय है कि परिवार का कोई सदस्य यदि बीमार भी पड़ जाए तो घर में तनाव उत्पन्न हो जाता है ।दिव्यांगता तो घर में माता पिता की तरक्की में ही बाधक बन जाती है कैसे परिवार के एक दिव्यांग के पीछे घर के सारे सदस्यों को परेशान होना पड़ता है । आने वाले समय में इस तरह की बीमारियों से निजात दिलवाने और भी आयोजन करके जरूरतमंद लोगो की मदद करते रहेंगे ।

इस अवसर पर मंचासिन अतिथियों में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री हिमांशु प्रजापति, जिला शिक्षाअधिकारी श्री हरिसिंहभारती, उपसंचालक सामाजिक न्याय संगीता यादव, डीपीसी श्री प्रदीप जैन, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्यअधिकारी डॉ एमएस गोसर, डीएसओ डॉक्टर राजेंद्र गुजराती, नेहरू युवा केंद्र से श्री अनिल जैन, एक्ट ईव फाउंडेशन से मोहन वर्मा सचिव रेड क्रॉस डॉक्टर के के धूत, नोडल अधिकारी जयसिंह सेंधव, वाइस चेयरमैन एम के नागर उपस्थित थे।

देवास में लघु उद्योग भारती का राष्ट्रीय सम्मेलन 5 से 07 अगस्त तक होगा

देवास। लघु उद्योग भारती सूक्ष्म एवं लघु उद्योगों के बीच कार्य करने वाला एक राष्ट्रीय संगठन है, जो कि राष्ट्रवादी विचारधारा के अंतर्गत कार्य करता है। लघु उद्योग भारती का ध्येय वाक्य राष्ट्र हित उद्योग हित है, जिसमें संगठन का हर सदस्य खरा उतरता है। लघु उद्योग भारती का उद्देश्य लघु एवं सूक्ष्म उद्योगों को बढ़ावा देना व उद्यमियों की समस्याओं को संगठन के माध्यम से हल करना है। लघु उद्योग भारती के देश भर में करीब 60000 सदस्य है व कुल 900 इकाईयां हैं, जो जिला या औद्योगिक क्षेत्र के स्तर पर एक शहर में विभाजित हैं। लघु उद्योग भारती की जिले की इकाईयों द्वारा प्रांत बनता है, प्रांत से प्रादेशिक इकाई बनती है और प्रदेश की इकाईयों से अखिल भारतीय इकाई बनती है। लघु उद्योग भारती द्वारा हर प्रदेश में प्रादेशिक कार्यालय स्थापित है, जो अपने प्रदेश की विभिन्न इकाईयों को नियंत्रित करता है। हर प्रदेश की इकाईयों द्वारा अखिल भारतीय इकाई तय होती है, जो प्रादेशिक इकाईयां को नियंत्रित करती है।

लघु उद्योग भारती द्वारा विभिन्न आयामों के माध्यम से अपने उद्यमियों के लिए समय-समय पर उद्योग हित के लिए कार्य किए जाते हैं। नए उद्यमियों को प्रशिक्षण दिया जाता है। लघु उद्योग भारती द्वारा महिला इकाई का भी निर्माण किया जाता है, ताकी महिलाओं का आत्मबल बढ़े और उद्यम के लिए वे प्रेरित हों। संगठन द्वारा अधिवेशन, प्रदर्शनी जैसे मंच अपने उद्यमियों के तैयार किए जाते हैं।

इसी कड़ी में देवास में एक शुभ अवसर आया है, जिसमें राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन किया जा रहा है। साथ ही इस आयोजन में अखिल भारतीय उद्यमी सम्मेलन, स्वयंसिद्धा इंडिया इंडस्ट्रियल फेयर शामिल है, जो कि देवास इकाई के लिए एक सौभाग्य की बात है। इसे लेकर प्रादेशिक इकाईयों से जुड़ी अन्य इकाईयां मिलकर कार्य कर रही हैं।

अयोजन की जानकारी – राष्ट्रीय अधिवेशन-लघु उद्योग भारती की अखिल भारतीय कार्यकारिणी की बैठक 5, 6, 7 अगस्त को देवास में आयोजित की जा रही है। इसमें देश भर के करीब 200 प्रतिनिधि हिस्सा लेने वाले हैं। जिनके तीनो दिन अलग -अलग सत्र रहेंगे। स्वयंसिद्धा इंडस्ट्रियल ट्रेड फेयर- यह आयोजन भी तीन दिवसीय रहेगा। जिसके लिए निशुल्क प्रवेश रहेगा। जिसका शुभारंभ देवास विधायक श्रीमंत गायत्री राजे पावर, देवास महापौर गीता दुर्गेश अग्रवाल, सभापति रवि जैन करेगे। स्वयंसिद्धा इंडस्ट्रियल ट्रेड फेयर में करीब 100 स्टॉल है। प्रमुख रूप से महिलाओं के द्वारा बनाए गए उत्पादों का प्रदर्शन इसमें किया जाएगा। इसमें पूरे प्रदेश भर से करीब 40 स्टॉल, अन्य राज्य जिसमें राजस्थान, छत्तीसगढ़, पंजाब इत्यादि से करीब 15 स्टॉल और बाकी स्थानीय स्टॉल रहेंगे। साथ ही कुछ इंडस्ट्रियल स्टॉल भी उपलब्ध रहेंगे। जिसको शहर के सभी नागरिक देख पाएंगे।

उद्यमी सम्मेलन- दिनांक 6 अगस्त को उद्यमी सम्मेलन का आयोजन भी किया जा रहा है, जिसमें मध्य प्रदेश के एमएसएमई विभाग का भी सहयोग है। इसमें हमारे मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव, एमएसएमई मंत्री चौतन्य काश्यप और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ कृष्ण गोपाल , लघु उद्योग भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष घनश्याम ओझा का सानिध्य प्राप्त होने वाला है। इस उद्यमी सम्मेलन में पूरे प्रदेश से करीब 1500 से अधिक उद्यमी रहने वाले हैं।

मध्यप्रदेश उद्योग दर्शन स्मारिका- इस अयोजन के साथ एक स्मारिका बनाने का देवास इकाई ने लक्ष्य लिया, जिसमे सभी इकाईयों व देश-प्रदेश के दायित्ववान सदस्यां की जानकारी एकत्रित कर इस स्मारिका में संजोया गया है। इसी के साथ लघु उद्योग भारती के संबंध में विशेष जानकारी भी स्मारिका में दी गई है। जिसका विमोचन उद्यमी सम्मेलन के आयोजन में किया जायेगा। प्रेस वार्ता में राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष समीर मूंदड़ा, प्रदेश सयुक्त महामंत्री सतीश मुकाती, इकाई अध्यक्ष प्रतीक गुप्ता, पूर्व अध्यक्ष संजय तलाटी व लघु उद्योग भारती सदस्य उपस्थित थे।

फिल्म और टीवी कलाकारों के बारे में आम धारणा है कि इन्हें सिर्फ अभिनय ही करना आता है। ये बात कुछ हद तक सही भी है, पर पूरी तरह नहीं। ऐसे भी कलाकार हैं, जिनकी प्रतिभा कुछ और विधाओं में भी है। ऐसी ही एक बहुमुखी प्रतिभा है सुष्मिता मुखर्जी, जिन्हें कई साल पहले एक टीवी सीरियल में पंकज कपूर के साथ 'करमचंद' सीरियल में किटी के किरदार में लोकप्रियता मिली थी। अब ये फिल्म और टीवी में अभिनय के साथ किताबें भी लिख रही है। हाल ही उनकी नई किताब 'नटी' प्रकाशित हुई है।

सुष्मिता मुखर्जी की नई किताब 'नटी'

फिल्मों और टीवी की जानी-मानी अभिनेत्री सुष्मिता मुखर्जी की छठी किताब 'नटी' आ गई। सुष्मिता अभिनेत्री के साथ लेखिका भी हैं। उनकी नई किताब बंगाल की एक वेश्या और अभिनेत्री विनोदिनी दासी पर आधारित है जिसने समाज की तय की रूढ़ियों को तोड़ा और आध्यात्म की राह पर चल पड़ी थी। सुष्मिता के पति राजा बुंदेला भी चर्चित अभिनेता और डायरेक्टर हैं। सुष्मिता मुखर्जी ने दिल्ली विश्वविद्यालय के मिरांडा हाउस कॉलेज से अंग्रेजी

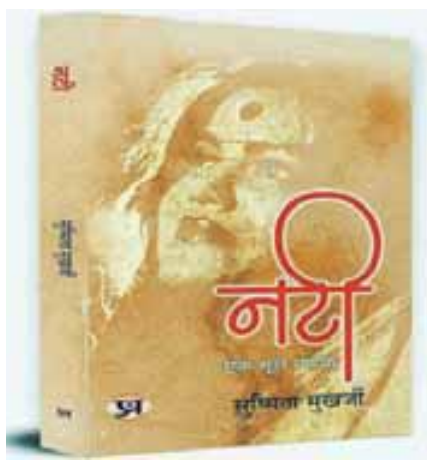

साहित्य में स्नातकोत्तर की उपाधि लेने के बाद 'राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय' से स्नातक की डिग्री हासिल की। 40 साल से अधिक लंबे अपने अभिनय सफर में उन्होंने रंगमंच, फिल्म, टेलीविज़न, वेब-सीरिज़ जैसे माध्यमों में बहुत सा यादगार काम किया। अपने थिएटर ग्रुप 'नाटक कंपनी' के लिए उन्होंने दो मूल नाटकों 'नटी' व 'नारीबाई' (एकल नाटक) की रचना की।

सुष्मिता मुखर्जी मध्यप्रदेश के ओरछा में एक गैर-लाभकारी संगठन 'रुद्राणी कलाग्राम एवं शोध संस्थान' भी संचालित करती हैं और साथ ही वे लेखन में भी सक्रिय हैं। उनकी किताबों मी एंड जूही बेबी, बांझ-इनकंप्लीट लाइफ ऑफ़ कंप्लीट वुमैन, इसका हिन्दी अनुवाद 'बांझ-स्त्री मन के अधखुले पन्ने', कॉफी-

टेबल बुक 'ब्रेवआर्ट्स ऑफ बुंदेलखंड' व उपन्यास 'खजुराहो कनेक्शन' को काफी पसंद किया गया। अब वे अपनी अगली किताब को पूरा करने में जुटी हैं। सुष्मिता अब एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में 'प्रोफेसर ऑफ प्रक्टिस' के तौर पर भी अपनी सेवाएं दे रही हैं।

उनकी यह किताब 19वीं सदी के बंगाल में वेश्या-अभिनेत्री विनोदिनी दासी पर केंद्रित है। उन्होंने न केवल समाज की तय की हुई रूढ़ियों को तोड़ा बल्कि अपने खुद के अंधेरे अतीत की छाया से बाहर आने का भी सफल प्रयास किया। एक दिन स्वामी रामकृष्ण परमहंस से हुई भेंट के बाद नटी विनोदिनी का स्वयं से साक्षात्कार हुआ और वह अध्यात्म की राह पर चल पड़ी। समय बदला मगर समाज की बनाई रूढ़ियां स्त्रियों के लिए आज भी कमोबेश कायम हैं। ऐसे में इस कहानी की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी) से स्नातक प्रख्यात अभिनेत्री सुष्मिता मुखर्जी ने विनोदिनी दासी की कहानी को आधुनिक समय में वर्तमान संदर्भों के साथ नाटक 'नटी' की नायिका मणि मेखला के ज़रिए कहने का प्रयास किया। उन्होंने इस नाटक को न सिर्फ लिखा बल्कि अपने थिएटर ग्रुप 'नाटक कंपनी' के अंतर्गत इसका सफल मंचन भी किया। पाठक इस नाटक की कथा में सिनेमाई छवियों का भी अनुभव कर सकेंगे।

सुष्मिता की फ़िल्में

पटना शुक्ला, ज़रा हटके ज़रा बच के, माइंड द मल्होत्रास, मल्होत्रा परिवार का ख्याल रखें, बत्ती गुल मीटर चालू, दिल तो दीवाना है, लंदन, मस्तीजादे, क्या कूल हैं हम-3, थोड़ा लुत्फ़ थोड़ा इश्क़, बिका हुआ, कामसूत्र 3डी, रक्त चरित्र, रक्त चरित्र-2, पाठशाला, तेरी संग, दोस्ताना, अग्ली और पगली, लकीर का दूसरा सिरा, अच्छा लड़का, बुरा लड़का, खोया खोया चाँद, आ जा नच ले, विनाश, गोलमाल, कोई आप सा, क्या कूल हैं हम, इंतेक़ाम, दिल्लगी, परमात्मा, महोदय माशूक़, राजा चाचा, गीतांजलि, आदमी खिलोना है, रुदाली, खलनायक, घर जमाई, प्रतिकार, मैं ज़िंदा हूँ, ये वो मंज़िल तो नहीं।

टीवी धारावाहिक

कहीं किसी रोज़, तलाश, तारा, राम खिलावन सीएम और परिवार, ये पब्लिक है सब जानती है, मेरी श्रीमती चंचला, काव्यांजलि, कुलवधू, भूत बना दोस्त, गनवाले दुल्हनिया ले जाएंगे, अगले जनम मोहे बिटिया ही कीजो, एक नई छोटी सी जिंदगी, करमचंद, इसी बहाणे, कभी सास कभी बहू, कब तक पुकारूं, गृहिणी है सब जानती है, मधुबाला-एक इश्क एक जुनून, बालिका वधू, गंगा कांता, इश्कबाज, दिल बोले ओबेरॉय, टीवी, बीवी और मैं मौसी, खिचड़ी की वापसी, कृष्णा चाली लंदन, जगन्नाथ और पूर्वी की दोस्ती अनोखी, मेरी सास भूत है।

अक्षय कुमार ने साफ किया अभिषेक का पत्ता

वाईआरएफ की 'धूम' फ्रेंचाइजी में अभिषेक बच्चन और उदय चोपड़ा की जोड़ी ने धमाल मचा दिया था। इस फ्रेंचाइजी की हर फिल्म में विलेन के रोल में बड़े स्टार्स नजर आए। 'धूम-3' में एक्टर आमिर खान नेगेटिव रोल में थे। हालांकि 'धूम-3' के बाद फैंस 'धूम-4' का बड़ी ही बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। वहीं अब फैंस का यह लंबा इंतजार आखिरकार खत्म हो गया है। दरअसल, धूम-4 को लेकर एक बड़ा अपडेट सामने आया है। 'धूम 4' के लिए शाहरुख खान और अक्षय कुमार का नाम सामने आया है। इस फिल्म में अक्षय कुमार जहां पुलिस अफसर का किरदार निभाएंगे तो वहीं शाहरुख खान नेगेटिव रोल में दिखाई देंगे।

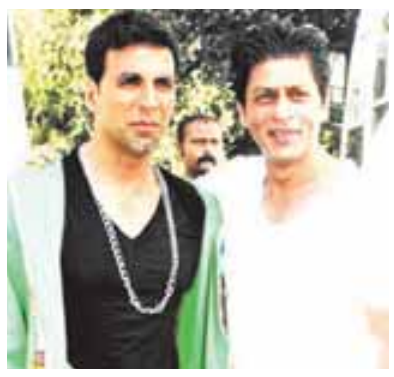

'धूम-4' की कास्टिंग को लेकर नितेश नवीन ने एक ट्वीट किया है। इसमें बताया कि आदित्य चोपड़ा की फिल्म 'धूम 4' में अभिषेक बच्चन और उदय चोपड़ा का किरदार बदल चुका है। इस फिल्म में जहां विलेन के रोल में शाहरुख खान नजर आएंगे तो वहीं अक्षय कुमार फिल्म में पुलिसवाले का किरदार निभाएंगे। नयनतारा और कैटरीना कैफ का नाम भी इस लिस्ट में शामिल है। अक्षय कुमार की गर्लफ्रेंड का किरदार निभाएंगी, तो वहीं कटरीना कैफ भी पुलिस अफसर के रोल में नजर आएंगी। वहीं फिल्म में उदय चोपड़ा की जगह एक्टर राजकुमार राव अली का रोल निभाएंगे। ट्वीट में ये भी बताया गया कि 'धूम 4' की स्क्रिप्ट आदित्य चोपड़ा और सिद्धार्थ आनंद ने मिलकर लिखी है। हालांकि, इस खबर पर अभी तक ना तो शाहरुख खान और न वाईआरएफ की ओर से कोई रिएक्शन आया।

रियल बॉक्स

अभिनेताओं के नेता बनने की अंतहीन दास्तां

हेमंत पाल
लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हर चुनाव में राजनीति की दुनिया के साथ फ़िल्मी दुनिया में भी हलचल कम नहीं होती। लेकिन, कलाकारों की अपनी लोकप्रियता भुनाने की लहरें ठंडी भी नहीं जल्दी पड़ती है। बीते कुछ सालों पर सरसरी नजर डाली जाए, तो ऐसे कई फिल्म अभिनेताओं के नाम सामने आएंगे जो राजनीति में आए, चुनाव लड़े और जीते भी। पर जल्दी ही हाशिए पर चले गए। देखा जाए तो राजनीति में सफल होने वाले कलाकारों के नाम उंगलियों पर गिने जा सकते हैं। अमिताभ बच्चन, धर्मेंद्र, विनोद खन्ना, शत्रुघ्न सिन्हा और सनी देओल जैसे कई सफल कलाकार हैं, जिन्हें राजनीति रास नहीं आई। इस बार कंगना रनौत, अरुण गोविल संसद में पहुंचे हैं। अब चार राज्यों में विधानसभा चुनाव होना है, इनमें महाराष्ट्र भी है जो फिल्म इंडस्ट्री का गढ़ है। निश्चित रूप से इस चुनाव में भी कई सितारे उतरेंगे।

सिनेमा और राजनीति में अकसर सरोकारों की साझेदारी दिखाई देती रही है। इसलिए कि इन दोनों ही दुनिया में सब कुछ असमंजस भरा होता है। कल तक जिस अभिनेता की फिल्म बॉक्स ऑफिस पर धूम मचाती रही, उसकी एक फ्लॉप फिल्म उसकी इमेज को ख़त्म कर देती है। यही स्थिति तो राजनीति में भी है। एक चुनावी हार नेता के राजनीतिक जीवन को रसातल में ले जाती है। दोनों ही दुनिया में सबसे बड़ी भूमिका उन लोगों की होती है जो उन्हें चाहते हैं। फ़िल्मी दुनिया में ये चाहने वाले दर्शक होते हैं और राजनीति में समर्थक। लेकिन, अब फिल्म और राजनीति की दोनों दुनिया एक-दूसरे में समाहित होती जा रही है। नेता तो फिल्मों के ग्लैमर की तरफ आकर्षित नहीं हो रहे, पर अभिनेताओं (अभिनेत्रियां भी) को राजनीति में जाने का चस्का जरूर लग गया। ये ताजा शगल नहीं है, बरसों पहले से है, पर अब ये ज्यादा बढ़ गया। जिस अभिनेता की एक झलक पाने को दर्शक घंटों इंतजार करते थे, वही अभिनेता लोगों से वोट के लिए हाथ जोड़ने खड़ा होने लगा। सिनेमा और राजनीति में यही रिश्ता है। इनकी सिर्फ हिंदी फिल्मों में ही ये नहीं है। कुछ ऐसी ही कहानी दक्षिण भारत में कई सालों से पनप रही है। वहां एमजी रामचंद्रन, जय ललिता, एनटी रामाराव और एम करुणानिधि ने भी फिल्मों में झंडे गाड़ने के बाद दक्षिणी राज्यों में राजनीति की कमान संभाली। ये पहले जाने-माने अभिनेता रहे, फिर लोकप्रिय नेता। इस परंपरा को बाद में रजनीकांत और कमल हासन जैसे अभिनेताओं ने भी आगे बढ़ाना चाहा, पर वे कोई कमाल नहीं कर सके।

सवाल उठता है कि कोई लोकप्रिय अभिनेता राजनीति में क्यों आता है! दौलत और शौहरत की तो उसे कोई चाह नहीं होती, फिर वो राजनीति में क्या लेने आता है। उसने चाहने वालों की अथाह भीड़ भी देखी होती है, जो किसी नेता के समर्थकों से कहीं ज्यादा बड़ी होती है। सिर्फ समाजसेवा की इच्छा रखकर राजनीति में आने वाले सुनील दत्त जैसे अभिनेता तो अब बचे नहीं, जिनके दिल में समाज के प्रति कोई दर्द बसता है। उनके बाद अमिताभ बच्चन, राज बब्बर, शत्रुघ्न सिन्हा, धर्मेंद्र, हेमा मालिनी, जयाप्रदा, जया बच्चन, राजेश खन्ना, विनोद खन्ना, गोविंदा, परेश रावल और मिथुन चक्रवर्ती जैसे कलाकार अपने समय काल में अपने मंतव्य से राजनीति में आए। इनमें से बहुत कम चले और जो नहीं चल सके, वे वापस लौट गए। इसलिए कि राजनीति का आशय सिर्फ अपनी फ़िल्मी लोकप्रियता के दम पर चुनाव जीतने तक सीमित नहीं है। समाज सेवा के लिए आगे आना, फिर मंच से अपनी आवाज जनता तक पहुंचाना इसमें शामिल है। फिल्म से राजनीति में कई अभिनेता आए, कुछ की ईमानदारी पर लोगों को भरोसा भी रहा, पर उनकी पारी लम्बे समय तक नहीं चली। इस सबके बावजूद यह सवाल आज भी जिंदा है कि आखिर अभिनेताओं की राजनीति का असल मकसद क्या है? अभिनेता की अपनी अलग दुनिया है, चाहने वालों की भीड़ है, अथाह पैसा है फिर उसे राजनीति में ऐसा क्या मिलता है, जो पाने की उसकी चाहत

ख़त्म नहीं होती।

राजनीतिक पार्टियों का नामी अभिनेताओं के प्रति सिर्फ इतना स्वार्थ होता है, कि उन्हें किसी मुश्किल सीट पर आसान जीत के लिए सामने लाया जाता है।सामान्य तौर पर चुनाव प्रचार में भीड़ जुटाने, किसी बड़े नेता के भाषण के पहले श्रोताओं का ध्यान आकर्षित करने के लिए अभिनेताओं को राजनीतिक पार्टियों से जोड़ा जाता है। लेकिन, बात यहीं ख़त्म नहीं होती। पार्टियों के लिए भीड़ जुटाने भी के अलावा इन सिनेमा के कलाकारों की भूमिका रही है। इनमें पुरुष कलाकारों के अलावा लोकप्रिय महिला अभिनेत्रियों ने भी राजनीति में अपने किरदार निभाए। दरअसल, किसी पार्टी का प्रचार भी जिम्मेदारी वाला काम है। आजकल राजनीतिक पार्टियों में स्टार प्रचारकों का दौर है, ऐसे में सिनेमा की ये हस्तियां ही अपने स्टार पावर का असर दिखाती है।

फिल्म और राजनीति ये दोनों ही ऐसी दुनिया है कि यदि इनमें संभलकर चलें तो जनता सिर पर बैठाती है। लेकिन, जरा चूके तो सारी लोकप्रियता धराशायी होते देर नहीं लगती। यही वजह है कि अपनी प्रसिद्धि को देखते हुए फिल्मों के कलाकार राजनीति में आ तो जाते हैं, पर कम ही लंबी पारी खेल पाने में सक्षम होते हैं। हिंदी फिल्मों के ऐसे कलाकारों में सुनील दत्त, हेमा मालिनी और स्मृति ईरानी ही हैं, जो कई बार चुनाव जीते और अपनी जगह बनाकर रखी। लेकिन अमिताभ बच्चन, गोविंदा, विनोद खन्ना, राज बब्बर, धर्मेंद्र, शत्रुघ्न सिन्हा, राजेश खन्ना, मिथुन चक्रवर्ती और परेश रावल हिंदी फिल्मों के ऐसे कलाकार हैं, जो राजनीति में लंबी पारी नहीं खेल पाए! इसलिए कि उन्होंने अपनी फिल्मी लोकप्रियता को राजनीति में भुनाने की कोशिश की, जो जनता को रास नहीं आई। कभी वे खुद राजनीति से हट गए, कभी जनता दिया। कुछ पार्टियों ने अपनी साख की खातिर कुछ अभिनेताओं या अभिनेत्रियों को राज्यसभा में शोभा की सुपारी बनाकर रखा है। जया बच्चन और जया प्रदा ऐसी ही अभिनेत्रियां रहीं, जिनका राजनीतिक पार्टियों ने चुनावी राजनीति से अलग रखकर राज्यसभा में अपनी पहचान बनाने के उपयोग किया। पहले यही काम राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत राज्यसभा सीटों पर सत्ताधारी पार्टी करती रही है। नरगिस, दिलीप कुमार और रेखा जैसे कलाकारों को भी इसी रास्ते संसद में भेजा गया था।

यह भी नहीं कि जिस कलाकार को पर्दे पर लोकप्रियता मिली उसे जनता ने भी हाथों-हाथ लिया। राजेश खन्ना, उर्मिला मातोंडकर, राज बब्बर, नगमा जैसे कई नाम हैं, जिन्हें वोटर्स ने नकारकर उनका ये मुगालता दूर कर दिया कि वे लोगों के दिलों पर राज करते हैं। धर्मेंद्र, सनी देओल, विनोद खन्ना, शत्रुघ्न सिन्हा और गोविंदा ऐसे अभिनेता हैं, जिनका राजनीति से जल्दी मन उचाट हुआ। लेकिन, हेमा मालिनी और जया बच्चन को राजनीति ज्यादा ही रास आई। ऐसा नहीं कि सिर्फ हिंदी फिल्मों के कलाकार ही राजनीति की तरफ आकर्षित होते हैं। ये चलन दक्षिण भारतीय फिल्मों में कुछ ज्यादा ही पनपा और तीन-चार अभिनेता तो मुख्यमंत्री कुर्सी तक पहुंचे। एमजी रामचंद्रन, करुणाकरन, जय ललिता और एनटी रामाराव की फिल्मों के बाद राजनीतिक सफलता किसी से छुपी नहीं है।

इसके अलावा भोजपुरी के बड़े कलाकार मनोज तिवारी और रवि किशन भी राजनीति में उतरे और सफल रहे। सफलता और असफलता का ये चक्र अंतहीन है। दरअसल, फिल्म के परदे की अपनी अलग ही दुनिया है। यहां सफलता पर दर्शकों की तालियों की गूंज बार-बार सुनाई देती है। लेकिन, अभिनेता से नेता बनने के बाद मन में दबी-छुपी आशंकाएं जन्म लेती हैं। ऐसे में अपनों से टकराहट, शिकायत और उलाहने के दौर के बीच की भी एक दुनिया होती है, जहां कई बार कोई साथ नहीं होता। अमिताभ बच्चन और राजेश खन्ना के राजनीति में आने और फिर लौटने के बाद उनकी छटपटाहट को आसानी से समझा जा सकता है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

बरसों से परदे पर छाया सावन कितना मनभावन

अशोक जोशी

इन दिनों वातावरण में सावन की गूंज सुनाई दे रही है। आसमान पर छाए काले बादल। उनसे बरसती फुहारे और धरती का बढ़ता श्रृंगार सभी सावन की सौगात है। यह सौगात प्रकृति तक ही सीमित नहीं रही है। सावन ने जहां आम

आदमी को आनंदित किया है। सिनेमाई हस्तियों को भी अपनी फुहारों से सराबोर किया। यही कारण है कि हर दूसरी फिल्म में सावन के नजारे दिखाई दे जाते है। यह बात अलग है कि सिनेमाई सावन कभी मनभावन होता है तो कभी दर्शकों को भिगोने में नाकामयाब होता दिखाई देता है।

सिनेमा का एक दस्तूर है कि यहां जो भी मिलता है उसका फिल्मकार इतना अधिक उपयोग करते हैं कि सारा कस निकाल लेते हैं। फिल्मों में सावन को भी कुछ इसी तरह निचोड़ा गया है कि कभी-कभी परदे पर सावन में भी सूखे की स्थिति निर्मित हो जाती है। फिल्मकारों ने फिल्मों के शीर्षक से लेकर सिचुएशन और गीतों तक हर जगह सावन को भुनाया है।

सावन को भुनाने का यह सिलसिला फिल्मों के टाइटल में सावन के उपयोग के साथ 1945 में ही आरंभ हो चुका था, जब 'सावन' शीर्षक से मोतीलाल और शांता आप्टे ने दर्शकों को आकर्षित किया। इसके चार साल बाद किशोर साहू को सावन की याद आई, तो उन्होंने 'सावन आया रे' कहते हुए दर्शकों को थिएटर तक खींचने का प्रयास किया। यह बात अलग है कि फिल्म में भले ही सावन आया, लेकिन थिएटर तक दर्शक नहीं आए। उसके छह साल बाद 1955 में सावन नाम से दूसरी फिल्म बनी जिसमें भारत भूषण और अमिता ने दर्शकों को भिगोने का काम किया। एक 'सावन' नाम से फिल्म 2006 में सलमान खान आई थी।

बीसवीं सदी के छठे से सातवें दशक में भी निर्माता निर्देशक सावन को नहीं भूले। 1966 में थ्रिलर फिल्मों के निर्माता निर्देशक शक्ति सामंत ने मनोज कुमार और शर्मिला टैगोर को लेकर 'सावन की घटा' को सिनेमाघरों के ऊपर बरसाने का काम किया। ओपी नैयर के गीतों के दम पर दर्शकों को सावन की यह घटा बहुत भायी। सावन का भरपूर फायदा 1969 में प्रदर्शित जे ओम प्रकाश की फिल्म 'आया सावन झूम के' को मिला। इस फिल्म में न केवल परदे पर सावन

झूम के बरसा बल्कि निर्माता की झोली भी हरी भरी हो गई। लेकिन, 1970 में दर्शकों के साथ सावन के नाम से ठगी कर 'सावन भादो' का भ्रम पैदा किया। फिल्म खूब चली लेकिन दर्शक बिना भीगे रेखा और नवीन निश्चल पर प्यार की बरसात करते रहे। फिल्म में न तो सावन के सेहरे थे और न भादौ की फुहार।

इसी तरह 1979 में प्रदर्शित श्री देवी की पहली फिल्म 'सोलहवां सावन' में जो सावन दिखाई दिया उसमें आसमान की बजाए श्री देवी का हुस्न ही ज्यादा बरसा। सावन का उपयोग करते हुए राजश्री ने 'सावन को आने दो' बनाई तो जितेन्द्र के भाई प्रसन्न कपूर ने 'प्यासा सावन' का निर्माण किया। लेकिन, इन फिल्मों से न तो सावन आया और न दर्शकों की प्यास ही बुझ पायी। मजे की बात तो यह है कि भारत ही नहीं पाकिस्तान में भी 'सावन' शीर्षक से फिल्म बन चुकी है।

फिल्मों में सावन का उपयोग कभी खुशियां मनाने, कभी प्रेम का इजहार करने के लिए किया गया है तो कभी गम की गहराई को

उजागर करने के लिए सावन का उपयोग किया गया है। इसके लिए अधिकांश फिल्मकारों ने सावन को संबोधित करते हुए गीतों का सहारा लिया है। यही कारण है कि फिल्मों के शीर्षक से ज्यादा फिल्मी गीतों में सावन बरसा है। वैसे तो बरसात और बारिश को लेकर हर दूसरी फिल्म में गीत बनाए गए है। लेकिन जिन गीतों में सावन शब्द का उपयोग हुआ है उनका असर भी कुछ कम नहीं है।

एक निर्माता गीतकार ऐसे भी है जिनका अपना नाम ही सावन है। सावन द लव सीजन के निर्माता सावन कुमार की फिल्मों में सावन का भले ही उपयोग कम हुआ हो, लेकिन उनके लगभग सभी गीतों में सावन शब्द उपयोग किया गया है। चाहे वह हवस के गीत 'तेरी गलियों में न रखेंगे कदम' का अंतरा हो घिर के आएंगी घटा फिर से सावन की या 'सनम बेवफा' के गीत चूडी मजा न देगी का तेरे बिना साजन सावन मजा न देगा ही क्यों न हो सावन कुमार ने अपने सभी गीतों में सावन शब्द का अनिवार्य रूप से उपयोग किया।

पुराने संगीतकारों में रोशन ने 'बरसात की रात' में शास्त्रीय संगीत को आधार बना कर गरजत बरसत सावन आयो रे प्रस्तुत किया तो मदन मोहन ने सावन के महीने में एक आग सी सीने में जैसा गीत बनाया। 'दो बीघा जमीन' का गीत हरियाला सावन ढोल बजाता आया धरती के श्रृंगार का प्रतीक है। लक्ष्मीकांत प्यारेलाल को सावन शब्द से कुछ ज्यादा ही लगाव रहा है। आनंद बक्षी के साथ उन्होने कई लोकप्रिय गीतों में सावन बरसाया है। इनमें सावन का महीना पवन करे सोर, रिमझिम के गीत सावन गाए, तेरी दो टकिया की नौकरी मेरा लाखों का सावन, आया सावन झूम के, कुछ कहता है यह सावन, मैं प्यासा तुम सावन शामिल है।

राहुल देव बर्मन को भी यह सावन बड़ा सुहावना लगा। उन्होंने मेरे नैना सावन भादो, बेचारा दिल क्या करे सावन जले भादो जले, सावन के झूले पडे तुम चले आओ, अब के सावन में जी डरे, रिमझिम गिरे सावन और

सावन जो अगन लगाए जैसे गीत रचे तो उनके पिता एसडी बर्मन ने अबके सजन सावन में आग लगेगी मन में जैसा मधुर गीत रचा। शिव-हरी की जोड़ी ने 'चांदनी' में लगी आज सावन की फिर वो झडी है रच कर दिल के दर्द को बढ़ाने की कोशिश की है। अब जब आसमान से सावन की बूंदे बरस रही है सावन के इन गीतों का स्मरण सावन और सावन के एहसास को कुछ और ज्यादा रंगीन बना देता है।

कागज नहीं दिखाएंगे, घर नहीं जाएंगे!

प्रकाश पुरोहित

जब भारत से पेरिस के लिए हवाई जहाज उड़ा तो थोड़ी ही देर बाद ये बातें शुरू हो गईं कि इसमें सवार तो तीन सौ हैं, आधे भी वापस आ जाएं तो गनीमत। इस ब्रह्म-वाक्य का मतलब समझ नहीं पाया तो पास बैठे ने समझाया 'ओलिम्पिक की वजह से फटाफट वीजा मिल रहा है, ये जितने लोग जा रहे हैं ना, ज्यादातर घूमने या खेल के लिए नहीं, बल्कि वहीं रहने के लिए जा रहे हैं। ये वापस नहीं आने वाले।' यह मेरे लिए नई खबर थी। पेरिस उतरा तो दो दिन में ही पता चल गया कि खबर पक्की है।

मेट्रो में जब पास बैठे एशियाई सूरत वाले से कुछ बोलना चाहा तो वह चुप रहा। ऐसा कई कई बार हुआ कि हाथ के इशारे से कहा 'आगे बढ़ो, बाबा!'

बस-स्टैंड पर एक युवक मिला। कहने लगा 'बड़ा मन हो रहा है खेल देखने का। खेल नहीं तो एक बार अंदर से स्टेडियम ही देख लूं।'

'तो क्या टिकट बहुत महंगे हैं...? कुछ तो बहुत सस्ते हैं, कोई भी खेल देख आओ।' ज्ञान दिया।

'नहीं, पैसे की कोई बात नहीं है, दरअसल मेरे पास कागज नहीं हैं, आठ साल हो गए, अभी तक पक्का नहीं हुआ है मेरा यहां रहना। अगर स्टेडियम गया और पुलिस ने

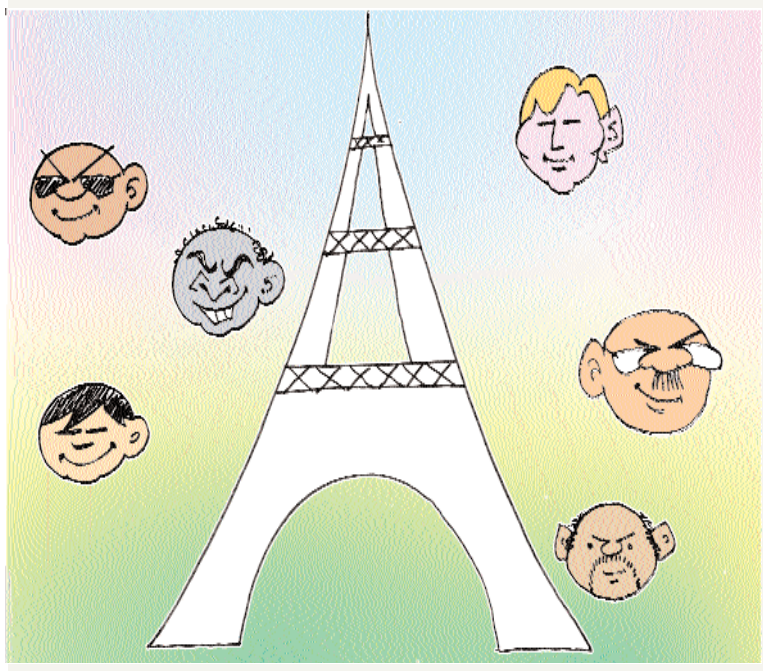

पूछ लिया तो जेल हो जाएगी और भारत वापस जाना होगा। जोखिम है यहां हर रोज का।' उसने रहस्य खोला।

'तो अभी कैसे रह रहे हो?'

'एजेंट लाया था, वही सब हेंडल करता है, पुलिस को भी। उसकी इजाजत के बगैर तो हम घूमने भी नहीं निकल सकते हैं। मुझे आठ साल हो गए तो अब थोड़ी छूट मिल जाती है।'

'तो क्या यहां भी पुलिस रिश्वत खाती है?'

वह हंसने लगा... 'आपने देखा है फ्रेंच और अंग्रेज किसी भी बात पर एक नहीं हैं, लेकिन पुलिस की स्पेलिंग दोनों की एक जैसी है यानी पुलिस कहीं की भी हो, रहती तो पुलिस ही है।'

पता चला इस समय फ्रांस में करीब अस्सी फीसद आबादी बाहर की है, असली फ्रेंच तो बीस फीसद भी नहीं हैं और वो भी पेरिस छोड़ कर दूरदराज के गांव में बस गए हैं। तलाशने निकलें तो शायद ही कोई 'अस्सल' फ्रेंच नजर आए।

फिर भी यह बात तो है कि इस आयातित आबादी को भी अपने फ्रेंच होने का घमंड है। यदि 'मूजो' नहीं बोला आपने तो ये मुंह नहीं लगाएंगे और बोल दिया तो घर तक छोड़ आएंगे। मिलते ही अभिवादन जरूरी है, इसके लिए आपको डांट भी पड़ सकती है।

'क्या अपने देश में गुड-मोर्निंग नहीं बोलते हो?'

'काका, किस गांव से?' फुटपाथ पर सुबह सामान जमा रहे ठेठ बनारसी सज्जन को देख कर मेरी बांछें खिल गईं। काका ने मेरी तरफ मुस्करा कर देखा और अपना काम करने लगे। कुर्ता-पायजामा ढीला-ढाला, सिर पर गठान लगी चोटी, उम्र कोई साठ पार, दुबली-पतली काया और हल्की बढ़ी हुई दाढ़ी। बताइए बनारसी होने में कहां कसर रह गई, लेकिन बोल नहीं रहे थे।

'काका, हम भी भारत से हैं...!'

उन्होंने पहचान में गर्दन हिला दी।

फिर लगा, ऐसा तो नहीं कि बोल नहीं पाते हों, लेकिन जब ग्राहक से बात करते देखा तो पक्का हो गया कि मुझे टाल रहे हैं। वहां से चल दिया और हाथ हिलाया उन्हें देख कर, तो फिर वही देसी मधुर-मुस्कान।

साथी ने बताया, यहां खुफिया विभाग इस तरह से कुछ लोगों को भेजते रहते हैं, पता लगाने, ये अपने ही लोग होते हैं और इनाम के बदले पकड़वा देते हैं, इसलिए एजेंट की हिदायत रहती है कि अनजान से दूर की दुआ-सलाम भी नहीं। ग्राहक से ज्यादा इनकी नजर ऐसे जासूसों पर लगी रहती है।

बस-स्टैंड पर ही श्रीलंकन जैकब मिला, जाफना से है। यहीं के गोदाम में सुपरवाइजर है। एक ही मिनट में खुल गया। 'दस साल यहां बगैर कागज के रहा हूं, वो दिन आज भी याद करता हूं तो सिहर जाता हूं। रात को जरा-सा खटका होता तो पूरी रात नींद नहीं आती। जाफना से भी बुरी हालत थी यहां। तभी यहीं की एक लड़की मेरी जिंदगी में आई और हमने शादी कर ली। अब दो बच्चे हैं, हां, यहां की लड़की से शादी बनाई तो कागज भी पक्के हो गए हैं, अब कोई डर नहीं, बल्कि कह सकता हूं, अब मैं फ्रेंच हूं, मुझे कोई निकाल नहीं सकता। वैसे भी हम एशियाई अगर यहां काम नहीं करें तो इस देश के एक दिन में भट्ठे बैठ जाएं। हम लोग ही तो इस देश को चला रहे हैं। पैसा है, काम है, लेकिन अपना देश तो फिर भी अपना ही होता है। दो-तीन साल में एक बार जरूर जाता हूं, पूरे परिवार के साथ, बहुत इज्जत और प्यार मिलता है।'

चेहरे देख कर आप देश का अंदाज लगा सकते हैं, लेकिन फ्रांस में ऐसा नहीं हो सकता। किसिम-किसिम के चेहरे देख कर तय करना मुश्किल हो जाता है कि किस देश में हैं। हां, डरे हुए चेहरे ही इस बात की पोल खोलते हैं कि 'कागज नहीं बना है अभी।'

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

मैं तुम्हें फिर मिलूंगी अमृता

वह हीर है
और फकीर भी
तख्त हज़ारा उसका मक्का है
और मनचाहा उसका दीन
वे जात की सूफी है
और मिज़ाज की फकीर
वो हीर हीर हो कर
रांझा रांझा लिखती है
और सब लिखा हर रोज
हवाओं के हवाले करके
मनचाहा हज करती है
वो हीर भी है
और फकीर भी है...

जी हां दोस्तों, पिघलती शमां, खुशबूओं की पोटली सी जो जब खोली जाती है उससे अक्षर झरते हैं, नाजुक टहनी सी, शब्दों का बिछौना लगाती है, उसपर नज़्मों का सिरहाना रखती है, जाने कितनी गज़लों, मीठी बातों की रजाई ओढ़ सोती है तो ये है हमारी फकीरन ''अमृता प्रीतम'' जिसके नाम में ही अमृत और प्रीत जुड़ी हो वो मुहब्बत के सिवाय क्या लिखेंगी। यूँ तो टुकड़ों-टुकड़ों में सभी ने अमृता को पढ़ा है। मैंने कोशिश की है उनकी बेतरतीब सी जिंदगी को इस सीरीज में एक तरतीब दूँ और दुनिया को बताऊँ अमृता का पर्याय इश्क़ भी है।

अमृता की जुबानी, उनकी कहानी बचपन से शुरू करते हैं उनका मानना है जब वो पैदा हुई घर की दीवारों में मौत के साये उतरे थे पुस्तक है ''अक्षरों के साये (एक अंर्तयात्रा) हालांकि ज़िक्र बाद में करती हूँ। अमृता जब तीन बरस की थी उनका छोटा भाई चल बसा और जब ग्यारह बरस की थी तब माँ चल बसी। जिस पिता ने हाथों में कलम पकड़ाई वो भी कुछ समय बाद अमृता को तनहा छोड़ गये। नन्हीं अमृता सोचती रही जब देना नहीं था तो माँ, भाई को क्यों दिया। जबकि माँ ने अमृता को मन्नतों से मांगा था। अब अमृता अकेली थी खुद के साथ। उन्होंने अपने ही प्रतिरूप को अमृता बना अपना दोस्त बना लिया और उससे बातें करने लगी। खुद से ही कहती आओ अमृता मेरे पास आओ। खुद से संतुष्ट अमृता के जीवन में गिने चुने किरदार थे। पिता ऋषि इतिहास और सिक्ख इतिहास पर लिखते सभा में सुनाते लोग उन्हें हार पहनाते। कई घटनाओं को प्रोजेक्टर पर दिखाते। नन्हीं अमृता उनकी उंगली पकड़े साथ रहती। अब समय अच्छा नहीं रहा दो निहंग बर्छा लिये आ खड़े हुये पिता सब सामान छोड़ नन्हीं अमृता को ले निकल गये। नन्हीं अमृता पूछती है क्या वह धर्म उसका नहीं है पिता मुस्कुराये, धर्म मेरा है कहने को उनका भी है पर उनका होता तो वे बर्छे निकालते। उनकी बरसों की मेहनत काले बक्से में बंद हो गई और जब हिंदुस्तान की तक्सीम होने लगी तब वे साथ नहीं थे जब माँ ज़िंदा थी तो रेलवे स्टेशन पर हिंदू पानी, मुसलमान पानी बिकता था अमृता पूछती पानी भी हिंदू मुसलमान होता है भला। बचपन से अमृता ने जिस माहौल में आंखे खोली उसकी नज़्म में इश्क के साथ दर्द भी उतर आया।

चीख-पुकार आगजनी के बीच अमृता लाहौर छोड़ देहरादून आई। रोजी रोटी के लिये दिल्ली पहुँची। वहाँ का माहौल देख उनके मुँह से निकला

उठो वारिस शाह
कहीं कब्र में से बोलो
और इश्क की कहानी का
कोई नया वरक खोलो
पंजाब की इक बेटी रोई थी
तूने लंबी दास्तान लिखी
आज तो लाखों बेटियाँ रोती है

ये नज़्म बहुत लंबी है। लोग घूम घूम कर गाने लगे, रोते भी जाते। कुछ अमृता पर गालियाँ बरसाते थे कि उसने एक मुसलिम वारिस शाह से मुखातिब होकर यह सब क्यों लिखा? सिख कहते थे गुरूनानक से मुखातिब होना चाहिये था। कम्यूनिस्ट कहते लेनिन से मुखातिब होना चाहिये। अमृता नज़्मों में बंटवारे का दर्द लिख रही थी-

मैं नसीब जली - पंजाब की बेटी
मैं बोल कर क्या कहूँगी
मेरी जबान तो काट दी गई
हाथ भी बंध गये, पैर भी बंधे हुये
और माथे पर किस्मत
काले नाग सी बैठी।

''पिंजर'' उपन्यास जिस पर उर्मिला मातोंडकर मनोज बाजपेई को लेकर फिल्म बनी थी अमृता का बंटवारे पर समर्पित उपन्यास था। अमृता अकेली अक्सर छत पर लेट चांद देखती उनका अहसास था सारे अक्षर चांद से गिरते हैं पहले दो अक्षर ''र'' और ''ज'' जिससे उनकी माँ का नाम राज बनता था आसमॉ से गिरे अमृता के हाथ आये। जवानी में उन्हें एक अक्षर और मिला ''न''। उन्होंने उसे राजन बना लिया जो उन्हें लेने कभी आयेगा और अब वो ''काल्पनिक राजन'' को प्रेमी बना कर मुहब्बत की नज़्म कहने लगी इसीलिये इस पुस्तक का नाम अक्षरों के साये पड़ा। अमृता ज्योतिष ग्रंथों का अध्ययन करती थी तो सितारों का इल्म रखने वाले ने कहा तुम जन्म के काल सर्प योग में लिपटी हो। उन्होंने बहुत सारे प्रसिद्ध पंड़ितों का ज़िक्र किया। ज्योतिष की ढेर सारी जानकारी रखने वाली अमृता ने राहु केतू सितारों की भाषा भी जानी और अगले एपिसोड में अमृता की रूहानी शक्ति को महसूस करेंगे और उनके ज़रिये उनके प्रेम के कमरे पर दस्तक देंगे।

अमृता का जन्म सन् 1919 में गुज़रांवाला (पाकिस्तान में है अब) में हुआ था। उनका बचपन लाहौर में बीता। वहीं शिक्षा हुई। किशोरावस्था में उन्होंने लिखना शुरू किया। 1998 तक उनकी कविताओं की 100 किताबें प्रकाशित हुई। उनकी पुस्तकों का अनुवाद विदेशी भाषाओं में हुआ। पहली महिला लेखिका है जिन्हें 1956 में साहित्य एकादमी पुरस्कार मिला। 1982 में ''कागज़ ते कैनवास'' ज्ञानपीठ और 2004 में पद्मविभूषण मिला। दिल्ली, जबलपुर, विश्वभारती पंजाब, फ्रांस, बंबई से डी लिट् की उपाधि ''पिंजर'' और ''कादबंरी'' पर फिल्म, जिंदगी सीरियल ''नागमणि'' पत्रिका संपादन, ढेरों विदेश यात्रायें, 1986 में राज्यसभा मनोनीत सांसद।

अभी आगे और भी बहुत कुछ कहेगी जिंदगी अमृता की।

जिंदगी का अक्स

फोटो- गिरीश शर्मा

संदीप नाईक

जहां घर है वहाँ पेड़ है

अगर आप मेरे घर का पता पूछे
तो मै आपको पूरा पता बताउंगा
और यह भी कहूंगा कि घर के बाहर
एक पेड़ है बड़ा गुलमोहर का पेड़
यह पेड़ नहीं मेरा सहयात्री है
सन उनअस्सी में जब इस घर आये
तो कही से एक पौधा रोप दिया था
और देखते देखते बड़ा हो गया बन गया पेड़
मैंने इसको नहीं, इसने मुझे
बड़ा होते देखा और सराहा
कई मौकों पर यह मेरा साथी बना
अपनी जवानी में जब उठा मेरे जीवन से
पिता का साया तो इसे पकड़ कर
रोया और ढाढस बंधाया माँ को
फिर भाई की शादी में इस पर की
रोशनी और लगाया टेंट को टेका
इसी से हरापन बचा रहा घर में मेरे
ठण्ड, गर्मी और बरसात में इसी के
पत्तों से आती रही छाया और बहार
इस बीच हर बार छांटता रहा
डगालियाँ इसकी कि कही बेढब
या दूसरों की जद में ना बढ़ जाए
और बीनता रहा पत्तों के ढेर अक्सर
कि जीवन फिर आता है पत्तों सा बार बार
माँ को अस्पताल जाते समय विदाई दी
इसने कि जल्दी लौट आना गृह स्वामिनी
पर जब लौटें लाश लेकर तो एक
पंछी भी नहीं बैठा था और सारे पत्ते सन्न थे
चुपचाप झर गया माह अगस्त में यह पूरा
फिर इसने एक नया आसमान खोला
सम्भावनाओं का, हरा हुआ पूरा एक बार फिर
हम सब जीवन में लौट आये थे
उबर रहे थे सदमे से कि एक बार फिर सचेत किया
इसने इस तरह कि यह सूखने लगा जड़ों से
गुलमोहर के मोटे और ऊंचे तने में
एक बरगद कही से उग आया था
सुना था बरगद के नीचे कोई नहीं पनपता
पर यह दुनिया का अनूठा गुलमोहर है
जो बरगद को अपनी शिराओं से पाल रहा है.
सोचा तो कई बार कि उखाड़ फेंकू बरगद को
माँ ने मना किया कि बरगद में ईश्वर का वास है
यह कैसा ईश्वर था जो हरेपन को सूखा रहा था
बरगद फूल रहा था और पेड़ सूख रहा था
धीमे से परन्तु कुछ नहीं बोला गुलमोहर
अभी जब गुजरा भाई तो यह फिर सूखा था
शाखें भी टूट गयी थी, झर गयी थी पत्तियाँ
दीमक लगने लगी है इसके तने में
पुराना पड़ता जा रहा है ठीक मेरी तरह

और अब सिर्फ हरापन बाकी है ऊपर से
गुलमोहर का यह पेड़ अब हो गया है
सभ्यता और इतिहास में दर्ज कि
एक परिवार को इसने बढ़ते और ख़त्म होते
देखा है, अब नई शाखें जो बिखर रही है
बरगद और गुल मोहर गडमड है आपस में
सब ख़त्म हो रहा है, हरापन पत्तियाँ, शाखें
बरगद अपने पाँव गुलमोहर में रहकर
पसार चुका है और ख़त्म कर रहा है इसे
फिर भी कमजोर तने और कुतरती दीमकों के
साथ खडा है पेड़ अपनी पुरी ताकत के साथ
फिर सामने है गर्मियां और कड़ी धुप
फिर आयेंगे राहगीर बैठ जायेंगे इसकी छाँव में
मांगेंगे पानी मुझसे और मै उन्हें पानी देकर
ताकता रहूंगा इसके हरेपन को, निहारूंगा
और आपको कहूंगा कि जहां पेड़ है वहाँ घर है।

पद की वजह से नहीं... पदक!

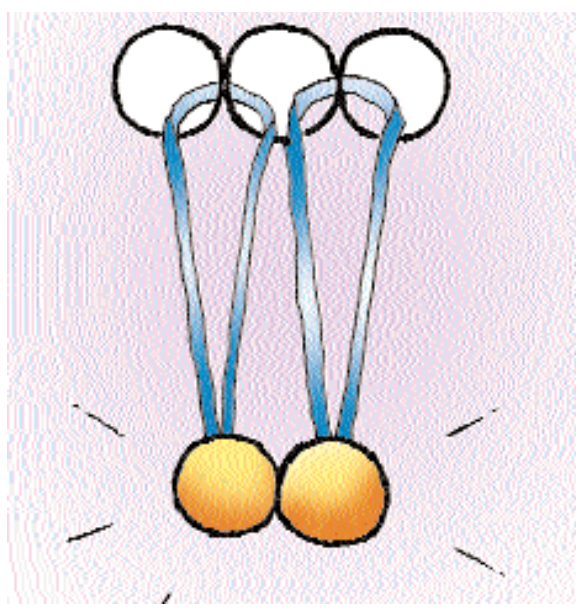

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

पेरिस ओलिंपिक पहला है, जहां महिला और पुरुष खिलाड़ी बराबर तादाद में हैं। भारत ने पहली बार 1900 में इस महाकुंभ में हिस्सा लिया था और पहली ही बार में नार्मन प्रिचर्ड ने दो सिल्वर मैडल से इंडिया का खाता खोला था। इसके बाद से इंडिया की हॉकी टीम ने ही लगातार देश के लिए पदक जीते हैं। इतने बरसों में कुल जमा अड़तीस पदक इंडिया के नाम पर हैं। 1980 से लेकर 1996 तक भारत ने एक भी पदक नहीं जीता और फिर जब 1996 में लिएंडर पेस ने भारत के लिए पदक जीता, उसके बाद से लगातार ओलिंपिक में इंडिया के आगे पदक तालिका में कोई न कोई नंबर आ ही जाता है। इतने लंबे समय के बावजूद देश में खेल और खिलाड़ियों के फलने और फैलने के कोई इंतजाम नहीं हैं। नौकरी के साथ अगर अपने खेल को बचा पाए तो इसमें सारा श्रेय स्वप्निल का है।

पेरिस ओलिंपिक में भारत के तीन पदक पर दिल खोलकर तारीफ हो रही है। सोशल मीडिया पर भाकर, सरबजीतसिंह और स्वप्निल कुसले की तारीफ है। न सिर्फ मनु बल्कि कोच जसपाल राणा की भी खूब तारीफ हो रही है। स्वप्निल रेलवे में टिकट चेकर हैं, उन्हें महेंद्र सिंह धोनी जैसा बताया जाने लगा है कि वो भी रेलवे में नौकरी करते-करते कहां से कहां पहुंच गए और अब स्वप्निल।

पेरिस ओलिंपिक पहला है, जहां महिला और पुरुष खिलाड़ी बराबर तादाद में हैं। भारत ने पहली बार 1900 में इस महाकुंभ में हिस्सा लिया था और पहली ही बार में नार्मन प्रिचर्ड ने दो सिल्वर मैडल से इंडिया का खाता खोला था। इसके बाद से इंडिया की हॉकी टीम ने ही लगातार देश के लिए पदक जीते हैं। इतने बरसों में कुल जमा अड़तीस पदक इंडिया के नाम पर हैं। 1980 से लेकर 1996 तक भारत ने एक भी पदक नहीं जीता और फिर जब 1996 में लिएंडर पेस ने भारत के लिए पदक जीता, उसके बाद से लगातार ओलिंपिक में इंडिया के आगे पदक तालिका में कोई न कोई नंबर आ ही जाता है। इतने लंबे समय के बावजूद देश में खेल और खिलाड़ियों के फलने और फैलने के कोई इंतजाम नहीं हैं। नौकरी के साथ अगर अपने खेल को बचा पाए तो इसमें सारा श्रेय स्वप्निल का है।

बचपन से पढ़ते आए हैं कि भारत का राष्ट्रीय खेल हॉकी है और वजह भी यही बताई गई थी कि ओलिंपिक में भारत उर्फ इंडिया की हॉकी टीम ब्रांज से लेकर गोल्ड तक सब मैडल जीत चुकी है, लेकिन पिछले दिनों भारत की सरकार ने जवाब दिया कि भारत का कोई भी राष्ट्रीय खेल नहीं है, क्योंकि भारतीय सरकार चाहती है सभी खेलों को बराबरी का बढ़ावा मिले।

क्रिकेट आज कमाऊ खेल है, लेकिन बाकी खेलों और खिलाड़ियों की पूछपरख नहीं है, सरकार अपनों को बचाने के लिए महिला खिलाड़ियों के साथ कैसा बर्ताव कर सकती है, यह तो दुनिया ने दिल्ली में देख ही लिया है। जब टोक्यो में मनु भाकर निशाना नहीं लगा पाईं तो इस कदर भला-बुरा कहा कि इस सदमे से उबरने में उन्हें महीने लग गए। वैसे टोक्यो में अपना नाम वापस लेने के लिए भला-बुरा तो अमेरिका की जिमनास्ट सिमोन बाइल्स को भी कहा गया था, लेकिन कोई असर नहीं पड़ा, जबकि मनु को अपनी ट्रेनिंग के लिए खुद ही सारे इंतजाम करने पड़े हैं। 'खेलोगे कूदोगे तो बनोगे नवाब' कहते हुए इन खिलाड़ियों को वैसी ही तैयारी दी जाए तो वो दिन दूर नहीं, जब न सिर्फ ज्यादा से ज्यादा खेलो इंडिया के खिलाड़ी शामिल होंगे, बल्कि पदक भी जीत कर आएंगे। द्य